मकसद को पूरा करना है।

मकसद को पुरा करना है !...

प्रकाशक
प्रफुल्ल शिंदे
'संपर्क'
५०/५१, दूसरा माला, गिल्डर लेन बी. एम्. सी. स्कूल,
मुम्बई सेन्ट्रल रेल स्टेशन के सामने, मुम्बई सेन्ट्रल (ईस्ट),
मुम्बई – ४०० ००८
टेलिफॅक्स : ०२२–२३००११३१
E-mail : mitra@bom3.vsnl.net.in

संस्करण
सप्टेंबर २००५

संपादक मंडल
– प्रफुल्ल शिंदे
– महेश पोतदार
– बळीराम बाळसराफ
– सुरेंद्र ढोणे
– प्रशांत वाघमारे
– मनिषा साबळे

मुद्रक
श्री प्रिंटर्स
मोबाईल : ९८२२२ ८१३४४

विशेष सहायता
मेधा कुळकर्णी

मुखपृष्ठ
सौजन्य – आर. एस. सी.डी.

Management Consultants

Development Alternaties
111/9-Z, Kishnagarh, Vasant Kunj,
New Delhi - 110070
Tel.:011-26134103, 26890380
Email: pacsindia@devalt.org
www.empowerpoor.org

PricewaterhouseCoopers(P) Ltd.

Supported by

DFID Department for International Development

Poorest Areas Civil Society (PACS) Programme

This booklet is an output from a project funded by the Department for International Development, UK for the benefit of developing countries. The views expressed are not necessarily those of Department for International Development, UK

विषयानुक्रम

बेबी दिदी ने बदला गाँव ६

राधाकृष्णन बचत संस्था – गाँव की प्रतिष्ठा १४

गाँव की कौटुम्बिक प्रमुख सागराबाई १८

सरपंच बनना है मुझे ! २२

कुशल संगठन और समर्थ नेतृत्व २६

स्वयंसिध्दा ३४

अब खानाबदोशी नही ! ३८

विधायक बनना है मुझे ४२

चुल्हेंसे पंचायत तक ४६

सक्षमीकरण ५०

स्त्रियों का सक्षमीकरण, सबलीकरण शब्द का उपयोग आजकल इतना हो रहा है कि इसके मूल अर्थ को समझ पाना कठिन हो गया है। अनेक स्वयंसेवी संस्थाएँ स्त्रियों के सक्षमीकरण के लिए काम कर रही है। अधिकांश बचत संगठनों का उद्देश्य पैसे के बचत से शुरु कर स्त्रियों के निर्णय लेने तक भूमिका तैयार करना है, अर्थात सक्षमीकरण तक जा पहुँचना है।

सरकारी आदेश भी स्त्रियों के सक्षम बनने की बात ऊँचे स्वर मे करते हैं। कागजों पर वैसा नियोजन किया जाता है। लेकिन असल मे इसमें स्त्रियों के लिए बेहद संघर्ष है। लंब ऊबडखाबड रास्ते है।

घर संसार के बाहर का विचार न करनेवाली महिला धीरे–धीरे कदम बढाते हुए सत्ता की कुर्सी तक पहुँचना साँस फुला देनेवाला है। इसे प्रत्यक्ष अनुभव करनेवाली महिलाएँ ही जानती है।

उनके शब्दों को बांधने का प्रयास इस पुस्तिका में हमने किया है।

पॅक्स की सहायता से मराठवाडा – विदर्भ में कितने स्वयंसेवी कार्य चालू है। स्थानिक स्वयंसेवी संस्थाएँ गाँव की महिलाओं को मार्ग दिखाने का काम कर रही है। इस पुस्तिका में सागरा, उषा, बेबी, नंदा, महानंदा, सुशिला जैसे महाराष्ट्र की सक्षम स्त्रियों का चेहरा है। बीजाबाई का ''यहाँ नहीं थमना है, आगे जाना है'', यह वाक्य पूरे महाराष्ट्र में सक्षम महिलाओं की एक बुलंद आवाज बना है।

महिला मंडळ, बचत संगठन, ग्राम पंचायत ऐसे कदम–दर–कदम आगे बढाते हुए पूरे मानव समाज के लिए विकास का स्वप्न साकार करनेवाली इन महिलाओं को सलाम!

प्रफुल्ल शिंदे
मुख्य समन्वयक
संपर्क

बेबी दिदी ने बदला गाँव

महाराष्ट्र के अनेक गाँवो मे आजकल महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए बचत संगठन योजनाओं का क्रियान्वयन दिखाई दे रहा है। इन बचन संस्थाओं के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को पहले आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर फिर सभी क्षेत्रों मे सक्षम करने का उद्देश्य साध्य हो रहा है। यह गडचिरोली जिला के एक ऐसी ही बेबीदीदी का वृत्तांत है।

बेबीदीदी ने बचत संगठन के माध्यम से गाँव के लोगों की कठिनाइयाँ ध्यान मे रखकर उस पर अवलंबित स्वरोजगार उपलब्ध करकर अपनी आर्थिक परिस्थिति बदलते हुए अपने दूरदर्शी होने का सबूत देते हुए 'शारदा बचत' संगठन के नाम से डेढ़ ते दो लाख की रकम जमा की थी। वह केवल आर्थिक रूप से सुदृढ नहीं हुई, बल्कि उसमें गजब का आत्मविश्वास झलकने लगा। ''मैने कोई अपराध नही किया है इसलिए मैं कहीं नहीं जाऊँगी। विधायक महोदय को मिलना है तो उन्हें यहाँ आना पड़ेगा। मै उन्हें ठीक से समझा दूंगी।'' ऐसा दृढ ढ़ंग से बोलने वाली बेबीदीदी आज किसी के भी खिलाफ बोलने से घबराती नहीं है। आज गाँग में उसका अच्छा मान–सम्मान है। उनके जीवन परिवर्तन की यह कहानी है।

मारकबोडी : यह गड़चिरोली जिला मे चामोर्शी तालुका का एक गाँव है। गड़चिरोली–चामोर्शी मार्ग पर गड़चिरोली से १० कि. मी. अंतर पर बसे डोंगरगाँव फाटा से ४ कि. मी. अंदर है। गाँव मे जाने के लिए डांबर की पक्की सड़क है। गाँव से लगकर पूर्व की ओर बेहद घना जंगल है। जंगल में महुआ, फूल, शहद, गोंद आदि वनोपज बड़े पैमाने पर मिलते है। गाँव मे कदम रखते ही वहाँ की सफाई आँखों मे भर जाती है। गाँव के रस्ते मिट्टी के है, पर स्वच्छ, कही भी गंदगी या कचरा दिखाई नहीं देता । कही भी गटर उफनती हुई दिखाई नहीं देती। गाँवो मे घर मिट्टी या ईटों से बनाये गए हैं। किसी का घर खपरैल का है तो किसीका गेरू से रंगा हुआ। हर घर में रंगोली सजी हुई दिखाई दी। गाँव में ७ वी

बेबीदीदी गौतम

तक शाला है। शाला एकदम साफ–सुथरी और रंगरोशन की हुई है। शाला विशिष्ट महत्व अर्थात शाला के मैदान में इंडारोहण वाले खंबे पर डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम और कल्पना चावला इन दो महान आदर्शों की तस्वीरें लगाई गई थी। गाँव में चर्च भी है।

मारकबोडी गाँव की जनसंख्या तकरीबन ८५० है। यह डोंगरगाँव के ग्रामपंचायत समूह में आता है। गाँव में बौध्द, तेली, माली, आदिवासी, ठाकु र, ईसाई जैसे अनेक जाति व धर्म के लोग रहते है।

पहले यह गाँव अत्यधिक आपराधिक प्रवृत्ति का था। लोगोंका आपस मे झगड़ने, मारपीट की वजह से इस गाँव का नाम मारकाबोड़ी पड़ा, ऐसा कहा जाता है। जंगल मे आसानी से मिलने वाले महुआ फूल से तैयार शराब पीने वालों की संख्या बहुत ज्यादा थी। गाँव मे दो हत्याएँ भी हुई है। परंतु कुछ

घटनाओं के बाद गाँव के लोग अपने आप बदलने लगे। इसमें एक प्रमुख घटना अर्थात बेबीदीदी गुननगर गौतम के पति गौतम की हुई हत्या है।

२० साल पहले गुननगर गौतम से विवाह कर बेबीदीदी इस गाँव आई थी। गुननगर ठाकु र था और बेबीदीदी गोंड़ आदिवासी थी। दोनों का संसार मजे से चल रहा था। गुननगर का गाँव मे किराने की दुकान थी। गाँव के लोग उसी से किराना सामग्री खरीदा करते थे। कुछ लोग उधारी भी ले जाते। बेबीदीदी को एक बेटा और एक अपंग बेटी थी। अपंग बिटिया को घर में ज्यादा वक्त देना पड़ता था फिर भी वह फुरसत मिलने पर दुकान में जाकर गुननगर को मदद करती थी। सबकुछ व्यवस्थित ढंग से चल रहा था। एक दिन गुननगर का गाँव मे एक व्यक्ति से उधारी को लेकर झगड़ा हो गया और उसने गुननगर की हत्या कर दी।

बेबीदीदी के ऊपर अचानक आसमान टूट पड़ा। दुनिया के व्यवहार से अज्ञान बेबीदीदी पर दो बच्चों के पालन–पोषण की जिम्मेदारी आन पड़ी। बेबीदीदी के जीवन संघर्ष की शुरुआत हो गई। पति के हत्या के बाद दुकान चलाने की जिम्मेदारी बेबीदीदी ने स्वीकार ली। पर अपंग बेटी के कारण वह ज्यादा समय अपने दुकान के लिए नहीं निकाल पाती थी। अंत में एक दिन उसको दुकान बंद करनी पडी।

उसके सामने रोटी–पानी का प्रश्न आ खड़ा हुआ। एक तरफ बेटे और अपंग बेटी की देखभाल तो दूसरी तरफ दो वक्त की रोटी के लिए की जानेवाली जीतोड मेहनत से थककर वह चूर हो जाती। विधवा होने के कारण गाँववालों की ललचाई नजरें उसे आहत करती थी। गाँव के लोगों ने उसे केवल गाँव के निकालना बाकी रखा था। ये सब कहते हुए उसकी आँखों मे तैरने वाले आँसुओं से उसके उठाए गए कष्टों का भान होता था।

साँवले वर्ण की बेबीदीदी की आँखे धस गई थी। गाल पिचक गए थे और चेहरे की हड्डियाँ दिखाई दे रही थी। पीले रंग की लाल धारीवाली धोती पहने बेबीदीदी का शरीर दुर्बल हो गया था। आँखो की रोशनी नम होने के कारण चश्मा लगानेवाली ४० वर्षीय बेबीदीदी के चेहरे पर दुख, संकट और कष्ट उठाने के भाव स्पष्ट दिखाई देते थे। बेबीदीदी का चार कमरों का घर ईंट–गारे से बना

था। खपरैल का छप्पर था। घर की दीवारे आधा तोता रंग और आधा गुलाबी रंगसे पोता गया था। घर के सामने के कमरें में हिन्दू धर्मो के सभी देवी–देवताओं की तस्वीरे लगाई गई थी, साथ ही भारती का भी फोटो था। एक दीवार पर ‘दे नहीं ले नहीं भ्रष्टाचार रोकें’ का पोस्टर लगा हुआ था। कमरे में कपडे डालने के लिए रस्सी बांधी गई थी। उस पर रोज के इस्तेमाल वाले कपड़े सही ढंग से टांगे गए थे। एक खाट था। खाट के बगल में दो तीन गद्दे पड़े थे। घर के एक कमरे में वजन तौलने का एक बड़ा तराजू टंगा हुआ था। उस पर अलग अलग रासायनिक खाद की कीमत लिखी हुई थी। इसी घर में बेबीदीदी अपने १७ वर्ष के बेटे के साथ रह रही थी, दो साल पहले उसकी अपंग बेटी का निधन हो गया था।

१९९५ के बाद बेबीदीदी का संघर्ष जारी रहते ही उसे आई. आई. डब्ल्यू. (Indian Institute of youth Welfare) संस्था के बारे में जानकारी मिली। उसने वर्ष २००० में कुछ घरेलू काम के लिए ५ हजार रुपये कर्ज लिया और काफी मेहनत कर कर्ज लौटाया। ऐसे ही वर्ष २००३ में आई. आई. वाई. डब्ल्यू. ने माकरबोडी में काम करने की शुरुआत की। संस्था ने बचत संगठन की जानकारी गाँव की महिलाओं को दी। बेबीदीदी ने आगे बढ़कर गाँव की बारह महिलाओं को इकठ्ठा कर महिला बचत संगठन स्थापित किया। हर महिला ३० रुपए की बचत करने लगीं। छह महिने पूरे होने पर उन्होंने इस बचत पर ५ हजार रुपए का कर्ज लिया। यह कर्ज संगठन की महिलाओं मे ही वितरित किया गया। यह कर्ज लौटाने के बाद संस्था ने एक बार फिर १६ हजार रुपए का कर्ज लिया। उसमें से बेबीदीदी ने ५ हजार लिया और उससे खपरैल बेचने का व्यवसाय शुरु किया। इस व्यवसाय के लिए उसे क्या करना पड़ा इस पर वह बताती है कि गाँव के ज्यादातर लोगों के घर खपरैल के है। हर साल मार्च के महीने में लोग अपने घरों का छप्पर सुधारते है। इसके लिए दूसरे गाँव जाकर खपरैल लाना पड़ता है। उसने सोचा कि क्यों न खुद ही खपरैल बेचने का धंधा शुरू करे तो गाँव वालों की कठिनाई दूर होगी और दो पैसे भी कमाया जा सकता है।

इस प्रकार गाँव के लोगों की परेशानी को ध्यान में रखकर उसने व्यवसाय

शुरू किया। मार्च में शहर जाकर वह उचित भाव में खपरैल लाती और ५ रुपए प्रति खपरैल हिसाब से बेचती। साथ ही बेबीदीदी ने जंगल से बीनकर लाए गए महुआ फूल की खरीदी करने की भी शुरुआत की। ५ से ७ रुपए किलो में वह जंगल से महुआ खरीदती और व्यापारियों को बेचती। महुआ फूलों का बाद में अच्छा भाव मिलता है। यह उसको मालूम था फिर भी उसके पास महुआ फूल रखने के लिए गोदाम नहीं था। इस वजह से वह महुआ को जल्दी बेच देती। इस कारण उसे ज्यादा फायदा नहीं होता।

बेबीदीदी ने इन दोनों व्यवसायों के लिए लिया कर्ज लौटा दिया। एक बार फिर बेबीदीदी के शारदा महिला बचत संगठन को २५ हजार रुपए का कर्ज मिला। उससे महिला बचत संगठनने धान की खरीद-बिक्री का धंधा शुरू किया। इसमे भी बेबीदीदी आगे रहती। गाँव में पैदा होने वाले अनाज की भी वह खरीदी करती, पर इसके लिए कृषि उत्पाद बाजार समिति का लाईसेंस लगता है, बचत संगठन को इसकी जानकारी नहीं थी। इसकी वजह से बिना लाईसेंस के अनाज खरीदने पर उन्हें जुर्माना भरना पड़ा। उसके बाद लाईसेंस लेने के लिए बेबीदीदी आगे आई। इसके लिए उन्हें किसी का सहयोग नहीं मिला। इतना ही नहीं, बचत संगठन की महिलाओं ने सारी जिम्मेदारी बेबीदीदी पर ही डाल दी थी। चौथी पास बेबीदीदी ने इसेक लिए कृषि उत्पाद बाजार समिति के कई चक्कर काटे। क्या कागाजात लगते हैं, अर्जी किसके पास देना है इसकी जानकारी खुद हासिल कर बेबीदीदी ने लाईसेंस प्राप्त किया और दूसरे साल से पुन: अनाज खरिदी करने लगी। एक बार फिर से अनाज गोदाम की समस्या आ गई तब बेबीदीदी ने आई. आई. वाई. डब्ल्यू. संस्था के जरिए बैंक से ढ़ाई लाख का कर्ज बचत संस्था को दिलाया।

गाँव के लोगों पर प्रभाव डालने वाला दूरदृष्टि बेबीदीदी के पास है। उस कर्जे से बचतसंस्था के नाम पर गाँव की एक महिला से आधा एकड़ जमीन १६ हजार रुपए में खरीदी। उसपर दो कमरों का पक्का गोदाम बनवाया, जिसके लिए उसे एक लाख का खर्च आया।

उसने इस गोदाम में महुआ के फूल और अनाज इकट्ठा करना शुरू कर दिया। फिर भाव बढ़ने पर वह माल बेचती, जिससे उसको काफी मुनाफा होता।

इसके अलावा बेबीदीदी ने कर्जे के पैसे रासायनिक खाद बेचने की भी शुरुआत की। गाँववालों की खाद के बारे में कठिनाई की वजह से उसने यह व्यवसाय शुरु किया था। इसके लिए इसने अपने घर के एक कमरे में कृषि सेवा केंद्र चालू किया। प्रमुख रुपसे जरूरतमंद किसानों को वह कर्ज पर खाद देती। वह बचत संगठन की बचत का उपयोग उन किसानों की खेती के लिए कर्ज आपूर्ति के लिए करती है। यह कर्ज वह केवल तीन प्रतिशत व्याज पर देती है। बेबीदीदी के कृषि सेवा केंद्र से गाँव के किसान खाद भी खरीदते है।

बेबीदीदी द्वारा शुरू किए गए व्यवसाय से गाँववालों की परेशानी दूर हो गई। गाँव में ही सभी चीजें उपलब्ध हो रही थी। बेबीदीदी के बचत गट को देखकर गाँव के अन्य लोगोंने भी १० बचत संगठन शुरु किये। पर किसी में भी बेबीदीदी जैसा व्यवसाय करने का साहस नहीं था।

बेबीदीदी ने कई कष्ट उठाए। गाँववालो की भली-बुरी बातें सुनी। इसी वजह से वह अनेक कष्ट सहकर आग में तपे हुए असली सोने की तरह बाहर आई। आज वह किसी भी बडे अधिकारी या मंत्रियों से बात करने में डरती नहीं है। उसने विधायक विजय वड़ेट्टिवार के ट्रेक्टर को जैसे रुकाया, यह अनुभव उसकी मुख से ''रात का वक्त था। गाँव के बचत संगठन की महिलाएँ करीबन ८ बजे मेरे घर पर आई। मैं गडचिरोली से तभी आई थी। केवल खाना बनाना बाकी था। उन महिलाओं ने बताया की कुछ लोग ट्रेक्टर लेकर जंगल की दिशा में गए है तुम चलो। मैं बोली मैं नहीं जाऊंगी, मैं थककर आई हूँ। पर महिलाएँ जिद पर अड़ी रही और ले गई। गाँव के सभी लोग वहाँ जमे हुएँ थे। मैं वहाँ पुहँची तभी ट्रेक्टर आया। ट्रेक्टर में जलाऊ लकड़ी लदा हुआ था। पर किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि ट्रेक्टर को रोक ले।''

''मैं ही बोली, तुम्हारा ट्रेक्टर मैं जाने नहीं दूँगी, तब गाँव के ही कुछ लोगों ने कहा कि, वडेट्टीवार के ट्रेक्टर को कैसे रोकती हो, जाने दो। मैं बोली कि गरीबों का जब कॉलर पकड़ते हैं तब नहीं कहते की जाने दो और अब तुम लोग वडेट्टीवार के ट्रेक्टर को कैसे छोड़ रहे हो ?''

''मैंने फॉरेस्ट ऑफिसर को फोन किया तो वह बोला किसका ट्रेक्टर है। मैं बोली वडेट्टीवार का। तब वह बोला गाँव के लोगों को ही जो करना हैं करने दो!

गाँव के नेता लोग कहते हैं कि बचत संगठन को १००-२०० रुपए चाहिए, ले लो, पर मैंने इन्कार कर दिया। तब गाँव के कुछ लोगों ने मुझे एक तरफ बुलाया और गुस्सा करने लगे और उधर से ट्रेक्टर को जाने दिया। मुझे बहुत बुरा लगा कि मैंने अपने गाँव के भले के लिए ट्रेक्टर को रोका था और गाँव के लोगों ने ट्रेक्टर को जाने दिया।''

यह घटना उसके जीवन में एक बड़ा संकट लेकर आई। ट्रेक्टर रोकने की खबर अखबारों मे छप गई। इसके लिए गाँव के लोगों ने बेबीदीदी पर ही आरोप लगाए कि अखबार में खबर छपवाने की क्या जरूरत थी, पर वह खबर उसने दी ही नहीं थी, उसने बताया। खबर पढ़कर एक दिन विजय वडेट्टीवार गाँव में आया और एक छोटे बच्चे के हाथों मिलने का संदेश भिजवाया। पर बेबीदीदी ने उलटा संदेश भिजवाया कि मैंने कोई अपराध नहीं किया है इस लिए मैं कही नहीं आऊँगी। यदि वडेट्टीवार को मिलना है तो यहीं आए मैं उसे उचित सम्मान देकर सब समझाऊँगी, तब वडेट्टीवार चला गया। लेकिन गाँव के लोगों मे उलटी-सीधी अफवाह फैल गई की बेबीदीदी के साथ मारपीट होगी। बेबीदीदी माफी माँग लो नहीं तो तुम्हारे साथ कुछ भी बुरा कर सकता है। इस वजह से बेबीदीदी को बेहद मानसिक कष्ट झेलना पडा, पर वह अपनी जगह दृढ़ थी। उसके बाद फिर कभी बाहरी व्यक्ति ने जंगल मे जाकर चोरी करने की हिम्मत नहीं दिखाई।

स्वयंरोजगार से बेबीदीदी की आर्थिक स्थिती बहुत सुधर गई थी। आज उसका बेटा कामर्स मे १२ वीं की पढ़ाई कर रहा हैं। बेबीदीदी का गाँव के सामाजिक कार्यों में सहभाग रहता है। गाँव मे कुछ बच्चे स्कूल नहीं जाते थे, उन बच्चों को उसने कापी-किताब, पेन आदि वस्तुएँ दी, जिससे बच्चे शाला जाने लगे। बेबीदीदी अब सरकारी रुकावट आने पर भी सफलता पूर्वक उसे पूरा करती है। इसके अलावा गाँव के स्त्री-पुरुषों का ग्राम पंचायत या जिला परिषद मे रुका हुआ काम पूरा करके देती है।

बेबीदीदी के असामान्य कार्योंकी वजह से गाँव के लोग उसको मानने लगे। बेबीदीदी का आई. आई. वाई. डब्ल्यू. के अलावा अन्य संस्थाओं से भी अच्छे संबंध हैं। आई. आई. वाई. डब्ल्यू. और कुछ अैन्य संस्थाओं के लोग

उनके पास गाडी लेकर आते हैं। इस वजह से गाँव के लोगों को भी बेबीदीदी का महत्व समझमें आने लगा। गाँव के लोगों ने ही उसे ग्राम पंचायत महिला सदस्य के लिए निर्विरोध चुन लिया।

आज बेबीदीदी के शारदा बचत गट के नाम पर आधा एकड़ खेत है, गोदाम है। अनाज खरीदने-बेचने का लाइसेंस इतनी संपत्ती है। साथ ही एक लाख १० हजार का कर्ज भी लौटाया है।

पर बेबीदीदी को गाँव के विकास के लिए कुछ करते रहना है। उसे गाँव में ग्राम स्वच्छता अभियान चलाना है। गाँव को खुले शौच के स्थल से मुक्त करना है। गाँव में एक सामाजिक मंदिर भी बनाना है। उसकी तरह स्वरोजगार करने के लिए गाँव की महिलाए आगे नहीं आती इस बात का उसको हमेशा अफसोस रहता है।

***

राधाकृष्णन बचत संस्था – गाँव की प्रतिष्ठा

मोठा पिडा : यवतमाल जिला के कलंब तालुका का यह गाँव। यवतमाल पांढरकवड़ा रास्ते पर लगभग २० कि. मी. पर। गाँव मुख्य रास्ते से लगभग ८ कि. मी. के अंतर पर बसा है। पहले ६ कि. मी. पक्की सड़क फिर कच्चा रास्ता है। पैंतीस से चालीस घरों का गाँव। २५० जनसंख्या वाले इस गाँव मे १० काश्तकार है, जिनकी अपनी खेती है बाकी सभी मजदूर। शिवणी उपग्राम पंचायत का यह गाँव। यहाँ गवली, गोलाम, कुणबी समाज के लोग है। गाँव में गवली समाज का प्रभाव है। साथ ही महानुभाव पंथ का भी दबदबा है।

गाँव में राधाकृष्णन बचत संगठन है। इस जनवरी माह में इस बचत संस्था को दो साल परे हो जाएँगे। इस गाँव में और भी तीन बचत संस्थाएँ है। राधाकृष्णन बचत गट की अध्यक्षा संगीता कालोकार है। गेहुँआ रंग, गोल, हंसमुख चेहरा, मध्यम शरीर। लगभग ३० वर्ष की उम्र। उसकी सहकर्मी सुधाताई गेहूंवर्णीय गाँव की सही जानकार। दोनों ने छहवारी धोती पहनी थी। दोनों कहती हैं – बचत गट कैसे स्थापित करना है इसकी हमको जानकारी नहीं थी। अस्मिता संस्था ने मार्गदर्शन किया। अस्मिता की मालाताई ने गाँव मे तीन–चार बैठकें आयोजित की, उसके बाद ही यह संस्था अस्तित्व में आई और हर महीने तीस रुपए बचत की शुरुआत हुई। आगे संस्था के मार्गदर्शन से बैंक से कर्ज लिया गया। उससे बीस भैंसे खरीदी गई। फिर बड़े पैमाने पर दूध बेचने का धंधा शुरू किया गया। एक भैंस से ४ से ५ लिटर दूध मिलता। रोज १५ से ३० लीटर दूध जमा होता। इस दूध से मक्खन और खोवा बनाया जाता. यह खोवा नाजा और जोडमोहा गाँव में बेचा जाता। जोडमोहा का पेड़ा प्रसिद्ध है। हम जो खोवा बनाते हैं वह १०० रुपए प्रति किलो बिकता है। संगीता कालोकार ७ वीं तक पढ़ी है। वह ग्राम पंचायत सदस्या भी थी। उससे यह पूछने पर कि उसने बचत संस्था क्यों स्थापित की, वह कहती है गॉव के विकास के लिए। क्योंकि यहाँ के मर्द कुछ नही करते। संगीता के पास ६ एकड़ पैतृक जमीन है। वह सुबह

संगीता कालोकार

साढे ५ से रात ९ बजे तक घर और खेती का काम करती है। उसकी सहकर्मी महिलाएँ दूसरों के खेत में मजदूरी करती हैं। या अपने खेत मे काम करती हैं। यहाँ सुबह ११ बजे से शाम ५ बजे तक खेत में मजदूरी करने का मेहनताना २५ से ३० रुपए मिलता है। मात्र दोन–तीन महिने काम रहता है। हम लोग गाँव पहुँचे, तब गाँव के बाहर आंगनबाड़ी और शाला में खिचड़ी बाँटी जा रही थी। पहले यहाँ एक शिक्षिका थी। अब दो हैं। यहाँ चौथी कक्षा तक शाला है, पर यह शाला समय पर शुरु नहीं होती थी। पहले एक शिक्षक था, वह दो बजे शाला खोलता। उस पर महिला बचत संस्था की सदस्याओं ने दबाव डाला। उसके बाद वह समय पर खोलने लगा।

इस गाँव में पहले शराब का बड़ा अड्डा था। एक हाथभट्टी थी। बंजारे लोग शराब लेकर गाँव आते थे। गाँव की सभी महिलाएँ इकट्ठी हुई। शराब

व्यावसायिकों को खदेड़कर उन्होंने गाँव मे शराब बंदी की। गाँव में एक कुंआ है, पास ही एक नाला भी है। बारिश के समय में नाले का गंदा पानी कुंए में आता है जिसकी वजह से कुँए का पानी पीने लायक नहीं रहता। गर्मी के मौसम में यह कुँआ सूख जाता है। कुँए को जानेवाला रास्ता भी खराब था, उसमें गड्ढे थे। चढाई हाने के कारण महिलाओं को पानी भरकर लाने में तकलीफ होती थी। इस रास्ते को सुधारकर 'रपटा' बनाया जाना चाहिए था, जिसके लिए सभी महिलाएँ इकट्ठी आईं। वे सभी ग्राम पंचायत के पास गईं और रास्ता बनवा लिया। पर वह इतनी आसानी से नहीं बना। गाँव के सरपंच ने सड़क बनवाने मे सीमेंट का गोलमाल किया। पर महिलाओं ने सीमेंट भ्रष्टाचार का विरोध कर सड़क बनवा लिया।

संस्था का पहला स्थापना दिवस इसी जनवरी महीने मे मनाया गया था। आसपास के गाँव की महिलाओं को भी बुलाया गया था। सौ–डेढ़ सौ महिलाएँ एकत्रित हुई थी। लाऊडस्पीकर लगाया गया था। इस कार्यक्रम में गाँव के पुरुषों ने भी सहयोग किया था। इतना ही नहीं, मेहमानों के आगमन के कारण किसी को भी रास्ते पर शौच नहीं जाने दिया गया। अस्मिता संस्था की तरफ से हम संस्था की महिलाओं को उस्मानाबाद के कलंब गाँव मे पर्यायी संस्था को भेट देने के लिए बुलाया गया था। यहाँ उनको रोजगार गारंटी योजना (रोहयो) की जानकरी मिली। यह पंचायत समिती से उनकी पहली मुलाकात थी। उन्होंने गाँव में रोजगार गारंटी योजना के काम के लिए अपनी मांग दर्ज कर दी। वहाँ साहब ने उन्हें तहसील कार्यालय जाने के लिए कहा। वे तहसील कार्यालय गए। तहसीलदार से मिले। उन्हे गाँव में रोजगार गारंटी योजना का काम मिला। यह काम दो महीने तक चालू रहा। इस काम के लिए यहाँ की महिलाएँ गई ही नहीं। पर कुछ मजदूरों ने इसका जरूर फायदा उठाया। अगले साल गर्मी में शिवणी से मोठा पीडा रास्ता बनाना तय हुआ है।

सरपंच ठीक से काम नहीं कर रहे थे। 'औरत मतलब क्या समझते हो, अडियल!' उन्होंने ग्रामसभा के लिए सुबह दस बजे ग्राम पंचायत कार्यालय में भेंट दी। ग्रामसेवक शराब के नशे में धुत था। ग्रामपंचायत कार्यालय में ताला लगा था। उससे ग्राम सभा के बारें में पूछा। सरपंच ने बताया कि उन्होंने कल ही

बैठक बुलाई थी। साहब आये थे। संगीता कालोकार ग्राम पंचायत सदस्या थी, फिर भी उसे कभी बैठक में नहीं बुलाया गया।

अभी हाल ही में हुए सरपंच चुनाव में महिलाओं ने मिलकर उसे चुनाव जीतने नही दिया।

इन महिलाओं का शिवणी स्थित ग्राम सभा में मुलाकात का परिणाम यह हुआ की सरपंच उनसे डरा–डरा रहने लगा। इस बचत संस्था के अनुसार ही शिवणी में भी बचत संस्था की शुरुआत की गई है।

इस बचतसंस्था को भविष्य में जल स्वराज के तहत गाँव में पानी की टंकी बनवाना है। इकसे अलावा शौचालय बनाने की भी योजना है। यह बचत संस्था गाँव की प्रतिष्ठा बन गई है।

***

गाँव की कौटुम्बिक प्रमुख सागराबाई

‘‘**मेरी** शादी हुई और मैं अपने ससुराल आसरखेड़ा आ गई।’’ पति से पूछा, ‘‘अजी, घर कहाँ है? पति बोला, ‘‘ये क्या है सामने, अपना घर।’’ वह घर देखकर मुझे रोना आ गया। एक छोटा सा टूटा–फूटा घर। घर क्या झोपडी ही थी। पर मैं कुछ नहीं कर सकती थी। सब कुछ अपने नसीब पर छोड़ दिया। मायके आने पर अपने माता–पिता से पूछा। उस पर माता–पिता ने जबाब दिया, ‘‘तुम्हारी शादी घर देखकर नहीं की गई है, बल्कि वर देखकर कि थी।’’ और यहीं से मेरे नए जीवन की शुरुआत हुई। पर नई शुरुआत करने से पहले मन में पक्का विचार किया की ऐसे घर में नहीं रहूँगी। सबसे पहले घर ठीक करूँगी, उसके लिए मजदूरी भी करनी पड़े तो कोई बात नहीं।’’ यह सब सरपंच सागराबाई दगडुबा हिवाले बता रही थी।

सरपंच महिला दिखने में सादी, मिलनसार स्वभाव की एकदम भोलीभाली है। किसी पर भी जल्दी विश्वास करती थी। केवल चौथी कक्षा पास थी ये महिला सरपंच। उसके बातचीत और पहराव का तरीका एकदम टीपटाप था। ज्यादा शिक्षित न होने के बावजूद उसके बात करने के ढंग से वह पढ़ी–लिखी जान पड़ती थी। गाँव की सारी जिम्मेदारी संभालने का पूरा कार्यभार इसी महिला के ऊपर है। इसकी मूल प्रेरणा का श्रेय उसके पति दगडू हिवाली और मराठवाडा किसान सहायता मंडल को जाता है। पति दसवीं पास है। पढ़ा–लिखा है फिर भी नौकरी का पता नहीं है। गाँव में बलुतेदारी करते है।

बैलगाड़ी, हल बनाकर देना और मरम्मत करना उसका काम है। बाप–दादा के जमाने से चला आ रहा काम उसने छोड़ा नहीं है। गाँव के सोलह परिवारों के लिए काम करते है। उसके बदले में उसे अनाज मिलता है। अपना घर बेहतर बनाना है इसी स्वप्न के कारण उसने खेतों मे मजदूरी का काम किया। जमकर किसानी की। एक–एक पैसा जोड़कर धन एकत्रित किया। आज उस टूटी हुई झोपड़ी की जगह एक खूबसूरत मकान खड़ा है वह भी

सागराबाई

सागराबाई के परिश्रम और हिम्मत से। घर की कौटुम्बिक प्रमुख सागराबाई है।

मराठवाड़ा किसान सहायता मंडल ने गाँव में बचत संस्था स्थापन करने के उद्देश्य से ‘कोजागिरी पूर्णिमा’ के दिन ‘हम सुधारेंगे अपना गाँव’ उपक्रम अपने हाथ में लिया। इस कार्यक्रम के माध्यम से सागराबाई को बचत संस्था का महत्व समझ में आया। इसलिए उसने गाँव में बचत संस्था शुरू करने की जिम्मेदारी अपने कंधे पर ली। शुरु में उसे पता नहीं था कि बचत संगठन निर्माण कितना कठिन है। पर बचत संगठन के लिए महिलाओं को तैयार करने के महत्व का काम उसने जिद में पूरा किया। शुरु में महिलाएँ कहती, ‘‘हमारे पति हमको नही करने देंगे, उनसे पूछना पड़ेगा। हमारे पास बचत करनेलायक पैसा नहीं है। हम बचत करेंगे लेकिन हमारे पति को मत बताईये।’’ इस शर्त पर धीरे–धीरे बचत संगठन की शुरुआत हुई। सागराबाई ने शारदा देवी, येलुमाता

और कामधेनू नामके तीन बचत संगठन शुरू किये है। इतना ही नहीं, बचत संगठन का महत्व कुटुंबप्रमुख पुरुषों को भी समझाने में वह कामयाब हुई है। आज महिलाएँ लुक–छिप कर या डर कर बैठक में नहीं आती, हम बैठक में जा रही हैं यह विश्वास के साथ बोलकर आने की क्षमता उन महिलाओं में पैदा हुई है।

वर्ष २००० में गाँव मे ग्राम पंचायत के चुनाव होने को थे। सागराबाई के पति ने उसे चुनाव में खड़े होने की सलाह दी। सागराबाई बोली, ''हम दोनों ही है। कौन हमें चुनेगा? यदि हार गई तो गाँव में अपना अपमान होगा। जो काम शुरु किया है वह बिखर जाएगा। पर पति के प्रोत्साहन और गाँव की बचत संगठनकी महिलाओं का उत्साह देखकर सागराबाई चुनावी मैदान में उतर गई। कोईभी प्रतिद्वंद्वी न होने के कारण वह १६७ मतों से ग्राम पंचायत चुनाव में चुनकर आई। इसका सारा श्रेय वह बचत संगठन की महिलाओं को देती है। सागराबाई का काम, उसकी काबलियत और उत्साह देखकर उसे ग्राम पंचायत में उपसरपंच का पद दिया गया। और सरपंच पद पुरुष के पास गया। जिला परिषद के मध्यावधि चुनाव होनेपर सरपंच जिला परिषद चुनाव में चुनकर आया और एक बार फिर सागराबाई के पास सफलता खुद चलकर आयी। गाँव का सरपंच पद उसे प्रदान किया गया। आज वह नियमानुसार सरपंच और उपसरपंच पद यशस्वी ढंग से संभाल रही है।

केवल चौथी पास बढ़ई समाज की इस महिला ने पूरे गाँव का विश्वास प्राप्त किया है। सागराबाई कहती है, ''पहले पुरुषों से बात करने मे मुझे पसीने छूटते थे, पर आज तहसीलदार, विकास खंड अधिकारी से बिना डरे मैं अच्छेसे बात करती हूँ। जिला अधिकारी या सीईओ से बिनदास्त बात कर सकती हूँ। इसके लिए मुझे काफी मेहनत करनी पड़ी।''

मराठवाडा किसान सहायता मंडल के विभिन्न शिविरों मे मैंने प्रशिक्षण प्राप्त किया। वहीं मुझे बात करने का बल मिला। आज मैंने अपने घर की आर्थिक स्थिति घर का कामकाज और गाँव के विकास कार्यों का उत्तम संयोजन किया है। सागराबाई के दैनिक कार्यक्रम देखकर अच्छे–अच्छे अवाक् रह जाएँगे। घर में झाडू–पोंछा से लेकर जानवरों को चारा ड़ालना, दूध दुहना, उसका खोवा

बनाकर बेचने के लिए बाजार भेजना, शालेय आहार के अंतर्गत दो सौ बच्चोंका आहार तैयार करना, आंगनवाडी के १७५ बच्चोंके लिए नाश्ता बनाना, उसे आंगनवाड़ी में जाकर बच्चोंको वितरित करना, बच्चोंकी देखभाल और गाँव का कार्यभार संभालना। इन सभी कामों को वह उत्तम ढंग से और नियोजित तरीके से पूरा करती है।

सागराबाई आजकल चार लोगों में उठती बैठती है। अधिकारियों से चर्चा करती है। तीज–त्योहारोंमे दूसरोंसे लेकर पेट भरनेवाली सागराबाई आज यशस्वी ढंग से गाँव का कार्य संभाल रही है। गाँव मे परिवर्तन लानेका उसका स्वप्न है और इस स्वप्न को साकार करने के लिए वह रात–दिन एक कर रही है। वह अब गाँव की कौटुम्बिक प्रमुख है।

***

सरपंच बनना है मुझे !

गाँव में रोजगार गारंटी योजना का काम चालू था। महिलाओं ने आवाज उठाई। हमको ही काम मिलना चाहिए। मशीन (जेसीबी) से काम नहीं करने देंगे। सभी महिलाएँ अड़ गई। रोजगार गारंटी योजना हमारे लिए है। ऐसी जगह जेसीबी से काम नहीं किया जा सकता। ऐसा होता तो मशीन से ही खुदाई की गई होती। हम काम नहीं करने देंगी। ऐसा सवाल महिलाओं ने मुकादम से किया। मुकादम ने महानंदा बाई को प्राप्त वर्क ऑर्डर दिखाने की कोशिश की। कुशल काम के लिए मशीन से काम किया जाता है, कहने लगा। परंतु महानंदाबाई कुछ भी सुनने को तैंयार नहीं थी। मुकादम की कुछ भी बात नहीं समझी उसने। मुकादम घबरा गया और काँट्रेक्टर को बुला लाया। सच कहें तो रोजगार गारंटी योजना में जेसीबी से काम नहीं किया जा सकता और काम को ठेकेदारी पद्धती से नहीं दिया जा सकता। कानूनन यह जुर्म है।

काँट्रेक्टर आया। वह नजदीकी राजेगाँव का प्रतिष्ठित (असली ठेकेदार) जिला परिषद का सदस्य था। उसने हर तरह से महानंदाबाई को समझाने का प्रयास किया लेकिन वह सुनने को तैंयार नहीं हुई। आखिर में तहसीलदार साहब को छोटे से गाँव से किट्टी आड़गाव मे बुलवाना पड़ा। महिलाओं ने ४ घंटे काम रोके रखा था। तहसीलदार साहब ने महिलाओं की सारी बातें सुनी। मशीन का पंचनामा किया और काम को तुरंत रुकवा दिया। मुकादम और काँट्रॅक्टर का चेहरा देखनेलायक था। काम रुकना नहीं चाहिए शुरु रहना चाहिए, गाँव के पाझर तालाब का काम गाँव के मजदूरों को मिलना चाहिए, ऐसा आदेश तहसीलदार साहब ने दिया और महानंदाबाई के चेहरे पर प्रसन्नता झलकने लगी।

महानंदाबाई की हिम्मत से गाँव के ३५ लोगों को २० दिनोंकी मजदूरी मिलीं और उन्होंने तालाब बना दिया। यह कहते हुए उसका सीना गर्व से फूल जाता। आज उस गाँव के पाझर तालाब की वजह से आस-पास के कुँओं को पानी मिलता है। गाँव से कुछ दूरी पर बने तालाब को घुम-घुमकर वह दिखा

महानंदाबाई थोरात

रही थी।

रसूखदारोंके विरोध में एक दलित महिला का आवाज उठाना आसान नहीं। उसके जीवन को खतरा है। संकट कभी भी हो सकता है। महिलाओं को जान और इज्जत बचाकर काम करना पड़ता है। मजदूर बड़े पैमाने पर बाहर चले जाते है। गन्ना की खेती, ईंट भट्टे, खेती और रोजगार गारंटी योजना के काम से लोग निकल जाते हैं। इसका नुकसान किट्टी, अडेगाव को भी उठाना पड़ा है। माजल गाँव से २० कि. मी. की दूरी पर बसा है यह गाँव। हमेशा की तरह मुख्य गाँव से लगकर दलितों की बस्ती है। यहाँ १० १० का घर, ४० साल की महानंदा थोरात का वह घर। दिखने में मध्यम कदकाठी, गेहुँआ रंग, घुमाकदार साड़ी में, मांग पर लाल सिंदूर, बोलने-बतियाने में निर्भीकता नजर आती है। मातंग समाज की, दो बेटी और तीन बेटे, पति के साथ रहती है।

पति–पत्नी दोनों मजदूरी कर जीवन यापन करते है।

वह ग्रामीण विकास केंद्र और मानव अधिकार अभियान की कार्यकर्ता हो गयी हैं। संस्था की मदद से उन्होंने गाँव मे चार महिला बचत संगठन स्थापित किये हैं। संगठन सदस्य हर महीने ५० रुपए जमा कराते है। ऐसा मिलकर सभी संगठन के पास १५,०००/– रुपए का आर्थिक लेन–देन है। ग्रामीण विकास केंद्र के सहयोग से हालही में बकरी पालन व्यवसाय शुरु किया गया है।

रोजगार गारंटी योजना क्या है। पंचायती राज कानून क्या कहता है? पुलिसिया कानून की जानकारी, जमीन अतिक्रमण इत्यादि विषयों का प्रशिक्षण महानंदाबाई ने संस्था के जरिए प्राप्त किया है। खुद महानंदाबाई ने गाँव की आठ एकड़ घासवाली जमीन अपने कब्जे में लीया है और १५ एकड़ जमीन बचत संगठन की कुछ महिलाओं को दिलायी है। केवल बचत संगठन तक मर्यादित न रहकर वह महिलाओं के विभिन्न सवालों पर भी चर्चा करती है और उनका हल निकालती है। आज वह लीडर के नाम से गाँव मे पहचानी जाती है।

महानंदाबाई की ताकत और रुतबा है। गाँव के रईसों और नेताओं को यह बात बरदाश्त नहीं होती। उसकी प्रतिध्वनि सुनाई देती रहती है। एक बार मातंग समाज के लोगों को कुछ बहाना बनाकर कुँए में पानी भरने से मना किया, क्योंकि यह कुँआ सार्वजनिक था और हनुमान मंदिर के पास था। ऐसा नहीं था कि इसके पहले यह समाज यहाँ पानी नहीं भरता था। सार्वजनिक कुँआ होने के कारण हर जाति के लोग पानी भरते थे। अछूत होनेके कारण उन्हे पानी भरने से रोक दिया गया। महानंदाबाईने पुलिस पाटील, सरपंच से बिना डरे पुलिस को जानकारी दी। खुद जाकर मामला दर्ज कराया। गाँव मे तनाव पैदा हो गया, परंतु लोगों ने सार्वजनिक माफी मांग ली। आज दलितों को भी पानी भरने दिया जाता है। इस माध्यम से उन्हें अपना हक मिला है।

एक घटना उसने सुनाई जो ऐसी है, ‘‘साहब, सरकारी दवाखाने में इंजेक्शन लगाने का पैसा नहीं लगता, पर डाक्टर साब लोगों से १० रुपए लेने लगे। यह बात मुझे हमारी कार्यकर्ताओंने बताई। मैं डाक्टर से मिलने पहुँच गई, किस नियम से १० रुपए लेते है? वह इधर–उधर देखने लगे। उसके बाद उसकी जमकर खबर ली, तब से आज तक डाक्टर ने किसी से पैसा नहीं

लिया। ऐसे कई काम, सवाल, समस्याएँ लोग उसके पास लेकर आने लगे। लोगों का विशेषकर बचत संगठन की महिलाओं का पूरा सहयोग उसे मिलता। नियम–कायदे की बात करने लगी है वह।

भविष्य के बारे में सोचा है क्या, ऐसा पूछने पर वह बताती है कि बच्चोंको अच्छी शिक्षा दिलाकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना है। हमारे समाज के गरीब लोगोंके लिए काफी काम करना है। मुझे सरपंच बनना है।

महानंदाबाई का यह सपना जरूर पूरा होगा इसमें कोई दो मत नहीं क्योंकि सभी लोग उसके साथ हैं। कोईभी राजनितीक, सामाजिक, आर्थिक सहयोग न होते हुए भी महानंदा केवल आत्मबल से लोगों की समस्याओं का समाधान करती है। वह निश्चित ही सरपंच बनेगी।

***

कुशल संगठन और समर्थ नेतृत्व

तुलजापुर तहसील में कुआँ बनानेवाले मजदूरों का मशहूर गाँव है 'आरवली'। यह पर्वतशृंखलाओं के बंजर पठारपर, लाल मिट्टीका पथरीला, ऊसर जमीन का सदैव अकाल की छाया में स्थित स्थलांतरित मजदूरों का गाँव है। उस्मानाबाद जिले से होकर जानेवाले राष्ट्रीय महामार्ग क्रमांक ९ से केवल एक कोस के फासले पर स्थित यह गाँव विकास से कोसों दूर है, जिसकी आबादी है बारहसौ।

हाईवे से दायी ओर मुड़ते ही गाडी अचानक कच्ची सड़क पर आ गई। सामने पहाड़ी की ढलान पर कुछ मकान, झुग्गियाँ-कूड़ाखाने, गोबर का ढेर और अंत में स्कूल की इमारत दिखाई दी। स्कूल के पास ही भोसले नामका ग्रामपंचायत का सिपाही मिला। उसके साथ बात करते-करते गाँव की पूरी जानकारी हासिल हुई। प्रस्थापित 'मराठा' जाति की आबादी के बराबर मुस्लिम समाज की आबादी वाले इस गाँव में लिंगायत और पिछडी जाति के हरिजन, मातंग, बढ़ई जैसी जाति-जमात के लोग भी रहते हैं। इस गाँव में कुल २३८ परिवार रहते हैं। यहाँ सात ग्रामपंचायत सदस्य है जिनमें तीन महिला सदस्य है। 'आरवली' गाँव मे चलनेवाले मेलेमें पहले दिन लिंगेश्वर का मेला होता है, तो तुरंत दूसरे दिन वाली पीर दरगाह का उर्स होता है। हिंदू-मुस्लिम एकता के इस अनोखे मेले में पूरे गाँव का सहभाग होता है। इस हिंदू-मुस्लिम एकात्मता पर गाँववालों को गर्व है। मेले में गाँव के युवको द्वारा नाटक का मंचन करने की पुरानी परंपरा है। नाटक की रिहर्सल के लिए और रंगमंच के रूप में जिसका उपयोग होता था वह चौपाल का चबूतरा भी धँस गया है, टूट-फूट गया है। बोर्ड और दरवाजें के बिना ग्रामपंचायत की इमारत है। चौथी कक्षातक सरकारी स्कूल है, बिना दरवाजों और खिडकियों की कक्षाओं में कुत्ते-बिल्लीयों की गदंगी साफ किए बिना बच्चों के स्कूल के दिन की शुरुआत नहीं होती।

पूरे गाँव में केवल दो लडकियाँ और तीन लड़के ग्रॅज्युएट है बाकी सब

बीबी जैनोद्दीन नदाफ

अंधेरा। पूछताछ में पता चला कि सरकारी नौकरी करनेवाले केवल आठ लोग है। ''खेती के बारे में पूछो मत साहब, बारिश हो न हो हमारे गाँव में पूरे साल अकाल ही होता है। कुलथी, साळी, मोठ, काला तिल जैसा कुछ न कुछ बंजर भूमि में उगता है। पीने के लिए पानी की समस्या है तो खेती के लिए पानी कहाँसे लाएँ? साहब, हमारे गाँव की पीने के पानी की समस्या दूर करने के लिए आप सरकार को कोई योजना बताइए। बडी मेहेरबानी होगी।'' इस तरह कहते हुए गाँव के लोगोंने अपनी पुरानी समस्याएँ हमारे सामने रख दी। धीरे- धीरे चबूतरे पर भीड़ बढ़ने लगी। छोटे-छोटे बच्चों को हटाकर गाँव के बुजुर्ग लोगोंने हमें घेर लिया। हम भी यही चाहते थे। जिस गाँव मे प्राथमिक साधन सुविधा नहीं है, वहाँ सिमेंट की सड़के कैसे बन गई हमारे इस प्रश्न का उत्तर पुलिस पाटील ने दिया, ''यह कार्य हमारे गाँव की बचत संगठन की महिलाओं का है। ये सरकार से

झगड़ा करके इस आयोजन को अपने गाँव ले आयी। महिलाओं के साथ हम भी थे। महिलाओं की पहल से इस सिमेंट की सड़क का कार्य पूरा हो गया।'' मराठवाडा के इतने छोटेसे अविकसित पिछडे हुए गाँव के औरतों ने पहल की, और पुरुषों द्वारा उस बात का गर्व के साथ कहना चकित होनेवाली बात थी। उत्सुकतावश हमने लोगों से पूछा कि आपके गाँव में महिलाओ ने और क्या उत्साहवर्धक काम किया है? इस पर गाँव वालों द्वारा जो जानकारी हमें मिली वह सचमुच उत्साहवर्धक और काबिले तारीफ है। गाँव में महिलाओं के चार बचत संगठन है। इनमें आर्थिक आदान-प्रदान के साथ महिलाओं के स्वास्थ्य, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक समस्याएँ, गाँव की समस्याएँ, सरकारी आयोजन, ग्रामसभा के अधिकार, ग्रामपंचायत सदस्यों के अधिकार, महिला अत्याचार विरोधी कानून इत्यादि विविध विषयों पर चर्चा होती है। इसी माध्यमसे महिलाएँ संगठित हुई और विकास के लिए संघर्ष करने लगी। इतना ही नहीं, राशन, मिट्टी के तेल के बँटवारे पर ध्यान रखती हैं। शराब बंदी के लिए संघर्ष कर रही है। गाँव मे रोजगार गारंटी के कार्य शुरु हो इसलिए सरकारी कार्यालयों मे अलग-अलग अर्जियाँ देती है। इस तरह की जानकारी वहाँ के ग्रामीणों द्वारा मिली। कुछ लोग औरतें 'कारभारी' (कार्य करनेवाली) हुई इसलिए नाराज थे लेकिन ऐसे लोग बहुत कम है। औरतों के इस कारोबार मे आगे कौन? पहले बचत संगठन की शुरुआत करनेवाला कौन? इस तरह पूछते ही, बिलकुल औरतों के विरोध में बोलनेवालो की तरफ से एकही नाम सामने आया... 'बीबी जैनोद्दीन नदाफ'

कौन होगी यह औरत? क्या करती है? इसकी पढ़ाई कितनी होगी? इसके घरमे कौन-कौन होगा? क्या घरवाले उसका समर्थन करते है? इस तरह के अनेक प्रश्नों के साथ हम गाँव के बाहर की बस्ती में पुहँच गये। सडक के दोनों ओर झुग्गियाँ और टूटे हुए घर, बीच में कही छोटे पैडपौधे, बकरियाँ, मुर्गियाँ, गाय, भैंसे सडक पर आडी-तिरछी बांधी हुई। वही गाँव के छोरे पर बीबी नदाफ का छोटासा घर। हरे रंग के दरवाजे, घर पर बिछा हुआ पुराना-टिन, दरवाजे में बंधी हुई भैंसे! ऐसे घर में हम लोगों ने प्रवेश किया। सिरपर मुस्लिम टोपी और कमर में लुंगी पहने हुए जैनुद्दीन नदाफ बीबी के पतिने हमारा

स्वागत किया। हमारी आवाज सुनते ही बीबी बाहर निकल आई। करीब चालीस साल की, साँवली सी दिखनेवाली बीबीने स्वयं पहल करके गाँव का चेहरा बदल दिया है। उसकी हट्टी-कट्टी शरीरयष्टि इस बात की सबूत थी। बीबीका ससुराल उस्मानाबाद में और मायका आरवली में। शादी के बाद माँ की बीमारी में उसकी सेवाटहल के लिए मायके आई हुई बीबी वापस लौटकर गई नहीं। पति जैनुद्दिन निजी ट्रक ड्राईवर के रुप में काम करता है, जो हमेशा गाँव के बाहर रहता है। दो भाई रोजगार के लिए मुम्बई गए, वे उधर ही रहे। जमीन पांच एकड़ है लेकिन पूरी बंजर। इसलिए गरीबी। पतिकी थोडीसी तनख्वाह और स्वयं की कमाई के सहारे बीबी अपनी दो लड़कियों और लड़कों की शिक्षा का खर्च चला रही है।

आरवली गाँव में सहयोग बनने से इस संस्था का काम शुरु हुआ। गाँव के चुने हुए लोगों के साथ चर्चा करते समय बचत संगठन के बारेमें चर्चा हुई। गॉव का पहला बचत संगठन शुरु कराने का साहसी प्रयत्न बीबी नदाफ ने शुरु किया, लेकिन घरसेही उसके पतिका विरोध था। अपना निषेध व्यक्त करते हुए उसने कहा कि अपनी मुस्लिम जाति में बुरका पहने बिना औरतों को घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। आप भले और अपना घर भला। इसपर बीबीने बाकी महिलाओं के साथ अपने पति को समझाने का प्रयत्न किया और सालभर में धीरे-धीरे उनका विरोध कम होता गया। बचत संगठन की मीटिग में सम्मिलित होना, विचारों का आदान-प्रदान, आर्थिक कार्योंकी पहचान, अधिकार, कर्तव्य, गाँव की समस्याएॅ, महिलाओं पर होनेवाले अत्याचार आदि विषयोंपर चर्चा होने लगी। एक-दूसरे की आर्थिक जरूरतें पूरी होने लगी। इसलिए महिलाओं का सहभाग और समर्थन बढने लगा। परंतु आरवली में और चार व्यवसाय शुरु हुए और वह घरेलू सिलाई काम भी करने लगी। किसीने भैंसे खरीदी, किसी को बीमारी में सहायता हुई। साहुकार के हाथों से खेत मुक्त करने के लिए, लड़कियों की शिक्षा के लिए बचत संगठन के पैसोंका उपयोग हुआ। इसी कारण औरतों का घर में और बाहर सम्मान होने लगा। महिलाओं की इस संगठन शक्ति का उपयोग बीबी नदाफने बडी चतुराई से किया और गाँव के कारोबार में ध्यान देना शुरु किया। सहयोग निर्मिती संस्था द्वारा समय समय पर होनेवाले विविध विषयों के प्रशिक्षण से बीबीको लाभ हुआ। घासलेट, राशन पूर्ति, ग्रामसभा,

पंचायत राज, औरतों के अधिकार, शासकीय आयोजन, रोजगार गारंटी के काम, संगठन बनाना आदि विषयों के बारे में बीबी को जानकारी मिलने लगी। बीबी में नेतृत्व गुण तो थे ही, अब धीरे धीरे महिलाओं की जिम्मेदारी उसपर आने लगी। प्रस्थापित समाज का विरोध स्वीकारते हुए वह गाँव के लोगों की समस्याओ में मदद करती है, उनपर होनेवाले अन्याय दूर करनेका प्रयत्न करती है।

पुराने जमाने में इस गाँव को ग्रामसभा का मतलब ही मालूम नहीं था। आज इसी गाँव मे ग्रामसभा में पुरुषों से अधिक औरतों की उपस्थिति होती है। गाँव मे स्वतंत्रता दिन, गणतंत्र दिन, राष्ट्रपुरुषों के स्मृतिदिन मनाने में औरतों की पहल होती है। राशन और घासलेट बंटवारे में होनेवाले भ्रष्टाचार के संदर्भ में बीबीने ग्रामसभामे महिलाओं के साथ चर्चा की। उसे संस्था के प्रशिक्षण में मिली हुई जानकारी के आधारपर और सबूतों की सहायता से उसकी दी हुई जानकारी से गाँववालों ने राशन दुकानवालेको समझ दी । परिणामस्वरुप आज राशन, घासलेट आनेके बाद उसके बारें में सूचना देते हैं और हर एक को रसीद दी जाती है। बीबी को रोजगार गारंटी के मिले हुए प्रशिक्षण के कारण वह गाँव के महिलाओं को काम माँगने के लिए अर्जी करने का आवाहन करती है। १७४ मजदूरों की अर्जियाँ ११ महिलाओं ने स्वयं तहसील ऑफीस में जाकर प्रस्तुत की। परिणामस्वरुप पंद्रह दिनों में गाँव में रोजगार गारंटी योजना का कार्य शुरु हुआ।

महिलाओं पर होनेवाले शारीरिक तथा मानसिक अत्याचार के बारे में बीबी हमेशा जागरुक रहती है। गाँव की लडकी सुरेखा गायकवाड को दो लडकियाँ होनेके वजहसे पति और सास द्वारा तकलीफ शुरु हुई। स्त्री अत्याचार होने लगा। एकही समय और वह भी अधूरा खाना देना, हररोज मारना-पीटना, अगर कोई समझौता करने आयेगा तो उसकपर शक करना, तेल से पैसे निकालना, मुँह मे गोबर ठूंसना, घर से बाहर निकलना बंद करना इस प्रकार की तकलीफ शुरु थी। तब महिलाओं का ध्यान गया। बीबीने महिलाओं के साथ सुरेखा के पति और सास को धमकी दी। पुलिस केस की धमकी दी और कहा कि तुम्हारी बकरियों को किसी के खेतपर नही आने देंगे। परिणामस्वरुप सुरेखा को आज

कोई तकलीफ नहीं है। अब सुरेखा पेटसे है और उसे भरपेट खाना मिलता है।

स्वास्थ्य विषयक गलतफहमियाँ दूर करते समय बीबी वैद्यकीय अधिकारियों की सलाह का उपयोग खूबी से करती है। आरवली जि. प. प्रा. स्कूल में खिचडी बनाने का कार्य किसे दिया जाय इसपर ग्रामसभा में चर्चा हुई। जिसमें बहुत नाम सामने आ गए। लेकिन औरतो ने अपंग, पिछडी जातिकी, जरुरतमंद सुजाता उबाळे का नाम सुझाया। उसपर चर्चा हुई और सहमति हुई। परन्तु बादमें गाँव में इसके विरोध में चर्चा हुई। जिसमें सुजाता पिछडी जाति की है और उसका पति महारोगी है, इसलिए उसे काम नहीं देना चाहिए, इस तरह का मत व्यक्त हुआ। परन्तु औरतों ने इस विषय की गंभीरता समझकर लोगोंको समझाया। अन्तमें प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में सुजाता पति को जाँच के लिए ले गयी। स्कूल के बच्चों को इसके कारण किसी प्रकारकी बीमारी नहीं होगी ऐसा डॉक्टरका गारंटी पत्र ले आई। इस तरह औरतों ने सुजाता को काम दिलवाया।

गाँव में नर्गिस दत्त कैंसर हॉस्पिटल बार्शी द्वारा कैंसर निदान शिविर आयोजित किया गया। उस समय गाँव की महिलाओं का स्वास्थ्य सलामत रहे इसलिए और आगे के खतरे टालने के लिए सभी महिलाओं की मीटिंग बीबीके घरपर हुई और १००% प्रतिशत महिलाओं द्वारा जाँच करने का निर्णय हुआ। निर्णयके मुताबिक १००% महिलाओं की जाँच की गई।

महिलाओंका संगठन बचत संगठन द्वारा बन रहा था। उसके साथ गाँव के कारोबार में महिलाओं का सहभाग होना चाहिए इसलिए महिलाओंने ग्रामपंचायत मे जाने का निर्णय लिया। बीबी नदाफने आगे बढकर ग्रामपंचायत बिनविरोध बनाने की कोशिश शुरु की। ग्रामपंचायत चुनाव के पडघम बजने लगे। पुरुषोंकी चर्चा, हर घर में जाना आदि काम शुरु हुआ। दूसरी ओर महिलाओंने बिनविरोध चुनाव की तैयारी शुरु की। कुछ ज्येष्ठ और कार्य करनेवाले लोगों को समझाने का सफल प्रयत्न औरतोने किया। मीटिंग हुई। एकदूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप हुए परन्तु महिलाओं ने अपना मत नहीं बदला। अन्ततः बिनविरोध ग्रामपंचायत के लिए एकमत हुआ और बीबी नदाफ का नाम महिलाओं के आग्रह की खातिर पुरुषों को लेना पडा। इस तरह बीबी नदाफ ग्रामपंचायत सदस्य हो गई। चुनाव से पहले गाँव के दोनो दलों के लोग चुनाव के लिए प्रयत्न कर रहे थे लेकिन

महिलाशक्ति की कोशिश से गाँव का चुनाव बिनविरोध हो गया। स्वयं बिनविरोध चुनकर आते आते बीबी ने गाँव का चुनाव भी बिनविरोध किया। नेतृत्वगुणों के साथ राजकीय खूबियाँ, राजकीय समझ और एहसास में सफल बढोत्तरी का यह एक आदर्श उदाहरण हो सकता है। बचत संगठन की शुरुआत से ग्रामपंचायत सदस्य तक की बीबी नदाफ की यात्रा तेजीसे चली । जिसमें लोगोंको उनकी परेशानी में मदद करना, सामाजिक आस्था और गाँव विकास का सहयोग मिल गया। उसने अपनी भी आर्थिक उन्नति की। बाकी लोगोंको भी सक्षम बनाया। अपने साथ बाकी महिलाओं को भी उनके हक, कर्तव्य और अधिकार पाने मे मदद की।

फिर भी वो बैचेन थी। गाँव मे बेचैन करनेवाली घटनाएँ हो रही थी। पूरे साल में गाँव मे तीन युवकोंकी शराब के कारण मृत्यु हुई थी। शराब के कारण उनके घर उजड गये थे। रोज के झगडे, गाली–गलौज और भूखा रहने के कारण औरते पुरुषोंके शराब के व्यसन से परेशान हो गई थी। इसलिये आरवली के समाज मंदिर मे २ जून को हुई ग्रामसभा मे बीबी नदाफ की पहल से नशा बंदी का विषय औरतोने बलपूर्वक सामने रखा। ग्रामसभामें औरतोके इस मत को गाँव के युवक और कुछ पुरुषोंने भी समर्थन दिया। इसका फैसला होना ही चाहिए इसलिये इसपर बहुमत होकर चर्चा हो गयी और तय हुआ कि शराब की तीन दुकाने बंद हो जायेगी। ग्रामसभा समाप्त हुई और साथ ही आठ दिनों के भीतर दो दुकाने बंद हो गई। एक महिला दूकानदार बंद करने को तैयार नही थी। इसके लिये महिलाओंने कमर कस ली और शराब की दूकान चलाने वाली सलीमा को धमकी थी। परन्तु गाँव के अमीर, प्रतिष्ठित पुरुष लोगोंकी सहायतासे शराब का धंधा चालू था। आखिर बीबी नदाफ महिलाओंको लेकर पुलिस अधीक्षक – उस्मानाबाद, तहसीलदार – तुळजापुर और नलदुर्ग पुलिस स्टेशन पहुँच गई और उसने अर्जी पेश की। इसलिये दूसरेही दिन पुलिस तुरन्त पहुँच गई और सलीमा पर गुनाह दाखिल करके उसको गिरफ्तार किया गया।

महिलोओंने शराब की दुकाने तो बंद की लेकिन गाँव का परिवेश बिगड गया। शराब पीने वालोंने हंगामा शुरू किया। वे लोग बाहरसे शराब लाकर महिलाओं के सामने, घर के सामने बैठकर शराब पीने लगे। संस्था को गाली–

गलौज शुरु हुई। गाँव में हंगामा शुरू हुआ। सयाने लोग सोचने लगे कि इस हंगामे से अच्छा परिवेश था जब गाँव मे शराब थी। महिलाओं को किसी का साथ नहीं रहा। वो अकेली पड गई। वो चिंता में पड़ गई। गाँव में सुरेखा भोसले नाम की महिला को अन्सार नदाफ नामक शराबी ने सडक पर अपमानित किया। महिलाओं की मीटिंग बुलाई गई । गाँव में शराब पीनेवाले और गालियाँ देनेवाले आठ लोगों की लिस्ट बना दी और उनपर पुलिस केस करना तय हुआ। उसके अनुसार पुलिस स्टेशन आऊट पोस्ट डटकळ में दस महिलाओं ने प्रत्यक्ष पहुँच कर फरियाद दर्ज की। पुलिस ने उसकी दखल नहीं ली। क्योंकि मुलजिमों में गाँव के प्रतिष्ठित लोगों के नाम थे। बाद में महिलाओं ने इसके बारे में स्थानीय विधायक के पास अपनी शिकायत दर्ज की। विधायक के दबाव से पुलिस स्टेशन में तुरंत कारवाई शुरु हुई। पुलिस की गाडी गाँव में पहुँच गई और आठ लोगों को पकड कर ले गई। उनको अच्छी तरह से डाँटा–फटकारा, उठक–बैठक लगाई गई और छोड दिया गया। पुनश्च दूसरे दिन उन शराबियों को पुलिस थाने बुलाया गया और उन पर गुनाह दाखिल किया गया। जमानत पर छुटकर आए हुए मुलजिमोंने गाँव में महिलाओं को विशेषत: बिबी नदाफ को गालियाँ देना शुरु किया, घर पर पत्थर फेंके, खेत का रास्ता बंद किया, परन्तु बीबी नदाफ ने धैर्य के साथ, इन धमकियोंसे न डरते हुए हिम्मत से काम लिया। इसलिए महिलाएँ अधिक साहसी हो गई और इस प्रकरण के कारण उनका संगठन अधिक मजबूत हो गया। गाँव मे महिलाएँ चार–चार, पाँच– पाँच का समूह बनाकर बाहर निकलने लगी, इसलिए यह संगठन गुंडो के लिए दहशत बन गया।

संघर्ष और विरोध के कारण संगठन हुआ और इस संगठन शक्ति का उपयोग महिलाएँ गाँव के विकास के लिए कर रही है। आज शराब की दुकाने बंद हो गई है। झगडे, गाली–गलौज भी कम हो गई है। महिलाओं के संघर्ष की यह विजय है। महिलाओं के संगठित कोशिश की, बिबी नदाफ के नेतत्व की जीत है। पॅक्स कार्यक्रम के अंतर्गत महिलाओं को दिए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम का यह फल है।

***

स्वयंसिध्दा

गडचिरोली जिले में एक गाँव है नवेगाँव । गडचिरोली से केवल पाँच कि. मी. पर यह गाँव है। शहर के निकट होने के कारण गाँव मे कुछ सुधार हुए हैं। गाँव में बहुत से शासकीय कर्मचारी है इसलिए बड़े-बड़े घर हैं। परन्तु उसके साथ गरीबों की संख्या भी उतनी ही है। यह गाँव नवेगाँव ग्रामपंचायत है।

इसी गाँव में नंदाताई भास्कर सहदेवकर रहती है। सन १९९० में उनकी शादी हुई और वे इस गाँव मे आई। सहदेवकर का होटल का धंधा था। नंदाताई उसमें उन्हे मदद करती। नंदाताई का दो कमरों का सिमेंट का पक्का घर था। सामनेवाले कमरे को गुलाबी रंग दिया था। बैठने के लिए कमरे में एक पलंग था। एक ओर सिलाई मशीन भी थी। नंदाताईने सिलाई की शिक्षा ली थी। इसलिए अपने स्वयं के और बच्चों के कपड़ों की सिलाई वे स्वयं करती हैं। वे ज्यादा पढ़ी-लिखी नही हैं। सातवी तक पढ़ी है। लेकिन वे चाहती है कि उनके बच्चे खूब पढ़े-लिखे। इसलिए सुबह उनकी रसोई पूरी होने तक बच्चे पढ़ाई करें ऐसा उनका नियम है। नंदाताई को दो लडकियाँ और एक लड़का है। लड़का ८ वी कक्षा में है। एक लड़की ६ ठी कक्षा में और २ री कक्षा में पढ़ती है।

गोल चेहरे की नंदाताई हृष्ट-पुष्ट है। नाक बहुत सीधी लेकिन थोड़ी ऊपर उठी हुई, आँखे बिलकुल छोटी, हँसने पर दो गालों के बीच गायब होनेवाली। केसरी साडी पर सफेद ब्लाऊज पहनी हुई नंदाताई के बर्ताव में आत्मविश्वास झलक रहा था।

२००३ से पहले नंदाताई और भास्करराव की मितव्ययी गृहस्थी चल रही थी। इसी तरह रहकर और मेहनत करके उन्होंने दो कमरों का घर बनाया। आई. आई. वाई. डब्ल्यू. वालों का पॅक्स कार्यक्रम नवेगाँव में शुरु हुआ। संस्था द्वारा गाँव की महिलाओं को किस तरह बचत संगठन की स्थापना करनी चाहिए, उसका क्या महत्व है, उपयोग है, इसकी पूरी जानकारी दी गई। फिर गाँव की कुछ महिलाओं ने बचत संगठन बनाए। वह देखकर नंदाताईने

नंदाताई सहदेवकर

२४-११-२००३ को गाँव की ११ औरतों का 'जयदुर्गा बचत गट' तैयार किया। उनके संगठन की सभी महिलाएँ अशिक्षित थी, अपवाद केवल नंदाताई। नंदाताई ने सबसे पहले संगठन की महिलाओं को अपना हस्ताक्षर करना सिखाया। इसके पीछे उनका उद्देश्य था कि बचत संगठन की महिलाओं का काम उनकी अनुपस्थिति में अटकना नहीं चाहिये। बचत संगठन की महिलाओं को वे हर वक्त अपने साथ ले जाती है और बैंक का कामकाज कैसे करना है वह भी सिखाती है। नंदाताई के 'जयदुर्गा गट' में प्रत्येक की ओर से ३०/- बचत करना शुरु हुआ। उन्होंने दो साल तक बचत की, लेकिन कर्ज नहीं उठाया। जब उनसे पूछा कि आपने दो साल तक कर्ज क्यों नहीं उठाया, तो उन्होंने कहा, ''कौनसा उद्योग करना चाहिये यह बात हमारे समझ में नही आ रही थी। कर्ज उठाकर घर में खर्च करने से कोई फायदा नहीं, इसलिए कर्ज नहीं उठाया।''

नंदाताई इस प्रकार का काम ढूंढ रही थी जिस में उनके संगठन की महिलाओं को कुछ रोजगार (पैसे, काम) मिलेगा। ऐसे में एक दिन उनको जानकारी मिली कि जिलाधिकारी कार्यालय का उपाहारगृह चलाना है। नंदाताई ने तुरंत अर्जी भेज दी। बचत संगठन की सभी महिलाओं को लेकर जिलाधिकारी से मिलने गई। उस दिन जिलाधिकारी नहीं मिलें। उसके बाद उनके कार्यालय में तीन–चार चक्कर लगाए। आखिर एक दिन जिलाधिकारी से मुलाकात हुई। उन्होंने बचत संगठन की महिलाओं से अनेक प्रश्न पूछे। बचत गट की महिलाओं के जवाबों से उनको तसल्ली हुई। जिलाधिकारी ने उनकी अर्जी को स्वीकार किया और अपनी पसंद व्यक्त की। परन्तु उसके बाद उनका तबादला हुआ। इसलिए उनका काम नहीं हो सका। नए आए हुए जिलाधिकारी द्वारा इस काम के लिए विज्ञापन दिया गया। 'जयदुर्गा बचत गट' द्वारा पुनश्च अर्जी भेजी गई। पुनश्च नए जिलाधिकारी से मिलने के लिए सभी महिलाएँ पहुँच गई। अनेक चक्कर लगाने के बाद वे मिले। नए अधिकारीने इस बचत संगठन की एकता और आत्मविश्वास को देखा और उन्हें उपाहारगृह चलाने को दे दिया। इस पूरी प्रक्रिया को करीब छह महीनों का समय लगा।

१०००/– रु. डिपॉजिट, ५००/– रु. किराया और इलेक्ट्रिक बिल, इस इकरार पर उपहारगृह चलाने की शुरुआत हुई। बचत संगठन द्वारा शुभारंभ के दिन १५० लोगों को चाय और नाश्ता मुफ्त में दिया गया। बचत संगठन की सभी महिलाओं का इसमें सहभाग था। पहले दिन उन्होंने ७००/– रु. कमाई की। फिर भी यह दिन उनके लिए नुकसान का था।

दूसरे दिन से नंदाताई स्वयं उपहारगृह चलाने लगी। इस कार्य में उनके पति मदद करते थे। बचत संगठन की महिलाओं में से एक महिला हररोज उपाहारगृह के लिए अपना समय देती है। उपाहारगृह में बटाटावडा, समोसा, कचोरी आदि बनाने में नंदाताई को उनके पति की मदद मिलती है। और एक लड़का भी उन्होंने मदद के लिए रखा है।

नंदाताई के उपाहारगृह को सिर्फ दो महीने हुए हैं। इन दो महीनों में बचत संगठन की प्रत्येक महिला को ६०० से ७०० रु. लाभ हुआ है। अब वे अच्छी तरह बस गई है। आनेवाली गरमी में कोई ठंडा पेय रखने का उनका इरादा है।

इसके सिवाय खाना भी शुरु करने की इच्छा है।

'जयदुर्गा बचत गट' की महिलाओं में एकता है। संगठन की किसी भी महिला के घर कोई भी कार्यक्रम अथवा समस्या हो तो सभी महिलाएँ मिलकर उसे पूरा करती हैं। नंदाताई को अपने घरकार्य में भी पति की मदद मिलती है। अब नंदाताई किसी भी अधिकारी से बात करने में नहीं डरती। अपने संगठन की महिलाओं को वह इसी तरह निडर बनाना चाहती हैं। इसलिए किसी भी काम के लिए सरकारी कार्यालय में जाते समय वे महिलाओं को अपने साथ लेकर जाती है। उन्हें उस अधिकारी से बात करने को कहती है। इसलिए इन महिलाओं में धीरे धीरे आत्मविश्वास बढ़ रहा है।

***

अब खानाबदोशी नही !

सुशीलाबाई सायबु चुनाळकर वडार जाति की, खानाबदोश विमुक्त जन–जाति की, जिसकी पूरी जिंदगी खानाबदोश है। इस जमात का रहने का कोई एक ठिकाना नहीं। अलग–अलग गाँवो में रहनेवाली यह जनजाति समाज की दृष्टि में जीवन–यापन करने के लिए गाँव–गाँव घूमनेवाली। इन्हें पत्थर तोडनेवाली जनजाति भी कहा जाता है। विशेषत: सड़क बनानेवाली। सड़क काम शुरु होते ही पत्थर के छोटे टुकडे करना इनका प्रमुख काम है। उनको गिट्टी भी कहते हैं।

इस तरह का कठिन काम करनेवाली कष्टभरी, आर्थिक कंगाली में जीनेवाली गरीब से गरीब वडार जाति।

सुशीलाबाई और उनका समाज समाज–प्रवाह से दूर होने के बावजूद सुशीलाबाई मजबूत लगी। अनुभवी लगी। दिखने में काली–साँवली लेकिन बाजूनी, साथ में कठिन जिंदगी के अनुभवों की पोटली, उसके साथ आत्मविश्वास भी। हम कोटलवाडी ताडा की ओर जा रहे थे। बीच उन्होंने कहा ''साहब, हमारा गाँव आप दूर से देख सकते हैं क्या?'' हम ऊंचे टीले पर खडे थे, नीचे था गाँव।

हिमायतनगर तहसील में कोटलवाडी गाँव पूरी तरह आदिवासी और जंगल से व्याप्त है। तहसील से १२ कि. मी. फासले पर पहाड की कोख में यह गाँव दूर से नहीं दिखाई देता। कढाई की तरह गाँव की स्थिती है। आजूबाजू में पहाडी, हरीभरी वृक्षराई, सड़क ही नहीं। जंगल से सड़क ढूंढते हुए जाना पड़ता है। गाँव के लोगों द्वारा श्रमदान से बनायी गई यह सड़क। बारिश में इस सड़क पर चलना कठिन होता है। इस गाँव के एक ओर वडार जमात तो दूसरी ओर बंजार जमात। कुलमिलाके सौ घर होंगे लेकिन निवेश अलग–अलग। दोनों जमात की महिलाओं ने मिलकर बचत संगठन बनाया। सुशीलाबाई का बोलना प्रभावी लगा। उसका एक कारण है। वे कह रही थी, मैं और मेरा पति हम दोनों मजदूरी करते थे, लेकिन मेरा पति शराब में पैसा उडाता था। सिर्फ मेरा पति ही

सुशीलाबाई चुनाळकर

नहीं सभी पुरुष अपनी कमाई शराब में उडाते। फिर गुत्तेवाला, साहुकार। इनसे पैसे लेन–देन चलता रहता । इसी में जिंदगी गुजरती। लेकिन सिप्रा संस्था के लोगों ने बचत संगठन क्यों और कैसा, इसके बारे में पूरी जानकारी दी। हमें वो पसंद आई और तब 'सायका माता महिला बचत गट' तैयार हुआ। फिर हम लोगों की एकता बढी और पहला काम शराब की दुकान तोड़ने का किया। यह कहते समय उसके अंदर जोश हम महसूस कर रहे थे। इसके बाद हमारी खानाबदोशी बंद हो गई। हाथ में पैसे भी रहने लगे। शराब बंद हो गई। आज हमारा अपना स्वयं बनाया हुआ घर है साहब!'

१० X १० का एक कमरा। सबसे सामनेवाला पहला कमरा ५८१० ऐसा उनका घर। बाजूकी झोपडी में रसोई। लेकिन रंगा हुआ, गोबर लिपा हुआ उनका घर, वे सचमुच स्थिर हो गए है, अस्थिर खानाबदोश जिंदगी समाप्त। चारों ओर देखते हुए पति–पत्नीने निश्वास छोडते हुए कहा, ''अब बहुत अच्छा लगता है साहब। हमने बहुत तकलीफे सही है।''

''अब भी मजदूरी कर रहे हैं और उसके साथ बचत संगठन से पैसे लेकर बकरी का धंधा करते हैं। बहुत पैसा कमाया। घर के लिए और बेटी की शादी में खर्च किया। एक ही लड़की थी।'' उसकी शादी कब की? कितने साल की थी वो? इस प्रश्न के जवाब में पतिने बताया कुछ चौदह-पंद्रह साल की होगी। सुशीलाबाईने तुरंत बताया साहब, हम लोगों में शादी जल्दी करते हैं। हमारा ही देखो न मैं ३० की हूँगी और ये ३५ के होंगे। लेकिन उसकी नजर बता रही थी यह गलत है। कम उम्र में शादी करना भी अब बचत संगठन के माध्यम से समझ में आ रहा है और मन में गलत किए की शर्म। तो पति को समझाते समय उसमें गुस्सा प्रकट हो रहा था।

पुनश्च उसने सड़क का सवाल उठाया और स्वयं कहने लगी, ''साहब, एक गर्भवती स्त्री को डिलिवरी के लिए दवाखाने में ले जाते समय सिरपर उठाकर ले जाना पड़ा। क्या करें रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। तब से हम सब ने मेहनत करके कैसे-कैसे यह सड़क बनाई। तहसीलदार से भी जाकर बताया कि हमारे लिए एक दवाखाना बांध दिजीए। सरपंचबाई तो इधर बिलकुल आती नहीं। कोई नहीं आता, वोट माँगने एकसाथ आते हैं। गुस्सेसे वह बोल रही थी।

फिर पूछताछ की। अब तो बाई आप खुश है, घर बनाया, बेटी की शादी की। दो बेटों के बारे में क्या सोचा है? साहब अब पैसा इकट्ठा होता है, इसलिए दूसरे की खेती बटाई में लेते है। खेती में २००० से ३००० रुपए तक खर्च किए तो पूरे वर्ष का अनाज मिल जाता है। पैसा भी वसूल होता है। फिर पत्थर तोडने के लिए जाने की जरुरत नहीं, इसलिए खुशी होती है। बकरियाँ तो है ही। ये बकरी और खेती देखते है। मैं भी खेत मजदूरी करती हूँ। ३०/- रु. रोजी मिलती है। समय मिलते ही पति के सात खेती में भी काम करती हूँ। अब झिग-झिग खत्म हुई है। समय मिलने पर बचत संगठन की औरते मिलकर पाठशाला में गुरुजी क्या पढ़ाते हैं वह देखते है। पहले तो गुरुजी नहीं आते थे। साहब से कहकर संस्था के कार्यकर्ता को अर्जी लिखे की बात हुई तो आने लगे। पंद्रह दिनसे अब रोज आ रहे हैं। बेटों को पढ़ा-लिखाकर आप लोगों जैसा साहब बनवाना हैं।

उसकी बातों से और घर देखकर ऐसा लगा यह पत्थर फोडनेवाली खानाबदोश जाति केवल बचत संगठन के माध्यम से स्थिर हो सकती है। इतना ही नहीं गाँवकी बाकी सुलगती समस्याओं को इतने अच्छे ढंगसे सुलझाते हैं। भविष्य में उनको दवाखाना और सड़क बनवानी हैं। तो महिलाओं का संगठन बनाकर मुझे सरपंच बनना है ऐसा वो कहती थी।

***

विधायक बनना है मुझे.....!

दो-चार बकरियाँ चरानेवाली, रोजगार हमी के काम पर जानेवाली, लोगों के खेत में काम करनेवाली 'दलित' मातंग जाति की विधवा, अनपढ़ आज भाटसांगवी गाँव की सरपंच है। बीजाबाई कही है, ''साहब, गाँव ने सम्मान दिया है इसलिए यह सब हुआ है। गाँव में हमारी जाति का एक ही घर है। पति की मृत्यु पंद्रह साल पहले हुई है। चार बेटे, चार बहुएँ और नौ नाती-पोतियों की गृहस्थी मैंने बडी मेहनत से खड़ी की है। मजदूरी करके सब को पाला-पोसा है। आज गाँव की सरपंच हूँ इसलिए बहुत गर्व महसूस होता है... साहब अब गँवार नहीं रहना है, हिम्मत करके आगे निकलना है। कळंब के पर्याय संस्थामें बीजाबाई से मुलाकात हुई। उसका बात करने का अंदाज और चलने का ढ़ंग प्रभावपूर्ण था कळंब से केवल ३ कि. मी. फासले पर होनेवाले उसके भाटसांगवी गाँव में हमे ले गई। कळंब तहसील में स्थित भाटसांगवी गाँव की आबादी ४५० है। जिसमें २२७ महिलाएँ और २२३ पुरुष हैं। मराठा समाज के अधिक परिवार है। मातंग समाज का केवल एकही घर है। ९७ परिवारों के इस छोटे से गाँव में दरिद्ररेखा के नीचे होनेवाले २७ परिवार है, उसमें से सात परिवारों की दरिद्ररेखा के नीचे के परिवार के रूप में शासन में दर्ज किया गया है। इस गाँव का प्रमुख व्यवसाय खेती और दुग्ध उत्पादन है। दो हाथपंप और एक विद्युतपंप के सहारे गाँव को पानी की सप्लाई होती है। जिला परिषद की एक पाठशाला है, जिसमें ६४ छात्र है और एक आंगनवाडी भी इस गाँव में है। ग्रामपंचायत के पाँच सदस्यवाले इस गाँव की बीजाबाई कोंडिबा आल्हाट यह दलित महिला आज सरपंच पद पर है। गाँव ने सम्मान दिया इसलिए सरपंच हुई' कहनेवाली बीजाबाई, तहसील में सम्मान मिलेगा तो मैं 'विधायक हो जाऊँगी' कहने में हिचकिचाती नहीं।

शुरुआत में पर्याय संस्था के कार्यकर्ता गाँव में आते थे उन्होंने बचत संगठन बनाने के लिए बताया लेकिन हमें खेती का काम और मजदूरी से १०-

बीजाबाई

२० रुपये मिलते थे। अब उसमें से खाने-पीने के लिए कितने खर्च करें और कितनी बचत करें, यह प्रश्न था। इसलिए हम बचत गट की कल्पना को टालते रहे। परन्तु संस्था के निरंतर संपर्क के कारण हम दस औरतों ने एक साथ मिलकर सप्ताह में बीस रुपये के चार बचत संगठन बना दिये। बीजाबाई प्रेम से कहती है। बचत संगठन के पैसे की सहायता से किसी के घर की शादी में, कर्ज उतारने में, बकरी, गाय-भैंस खरीदने, किसी को बीमारी में पूरी मदद हुई। इसलिए गाँव की साहुकारी बंद हो गई। बचत संगठन का आधार मिलने लगा जिससे महिलाओं की एकता बढ़ गयी । बीजाबाई को पंचायतराज, महिला प्रशिक्षण, ग्रामसभा आदि की जानकारी मिल गई। जिससे बीजाबाई की हिम्मत बढ़ गई। समूह में बोलने लगी, समूह का नेतृत्व करने लगी, समूह के कारण बैंक की कारवाई समझ में आने लगी। संस्थाद्वारा मिलनेवाले विविध प्रशिक्षण के

कारण बीजाबाई के नेतृत्व गुणों में बढोत्तरी हुई। गाँव में सरपंच, ग्रामसेवक, ग्रामपंचायत सदस्यों को ग्रामसभा में प्रश्न पूछने लगा।

ग्रामविकास के बारे में बात करने की हिम्मत आने के कारण बीजाबाईने पहल की। पिछले वर्ष गाँव के लोगों इकट्ठा करके ग्रामस्वच्छता अभियान में हिस्सा लिया। पूरे गाँव की सफाई की गई और कळंब तहसील में पहला क्रमांक और पारितोषिक भी मिल गया। दूसरे वर्ष गाँव जिले मे तीसरे क्रमांक पर था अब पहले क्रमांक के लिए वे प्रयत्न कर रहे हैं। संपूर्ण गाँव विकास के लिए वह आग्रह करती है। पहले बीजाबाई से लोग नहीं पूछते थे, पर अब सम्मान के साथ बोलते हैं। एक दलित महिला होने के बावजूद उसने सभी लोगों का समर्थन प्राप्त किया है और आज उसका सरपंच के रुप में चुनाव हुआ है। गाँव का कारोबार वह देखती। सम लोगों को अपने साथ लेकर, औरतों के हक, अधिकार के बारे में जानकारी हासिल करने का कार्य अपने स्तर पर निरंतर चालू रहता है। इसलिए गाँव की महिलाएँ उससे प्रेम करती है। गाँव की महिलाओं की समस्याएँ जैसे स्वास्थ्य, पखाने, सड़के, पानी, बिजली के लिए ग्रामसभा में जाकर संघर्ष करती है। महिलाओ को ग्रामसभा में जाने के लिए कहती है, स्वयं तो जाती ही रहती है, इसलिए महिलाएँ बीजाबाई पर विश्वास करती है। बीजाबाई गाँव में संत गाडगेबाबा ग्रामस्वच्छता अभियान चलाती है, उसके साथ गाँव की पानी की समस्या हमेशा के लिए दूर करने के लिए शासनद्वारा चलाये गये जलस्वराज्य प्रकल्प पर काम कर रही है। पूरे गाँव में पाखाने बनाने का और लोगों मे जागृति का कार्य कर रही है। शासन की अलग-अलग आयोजनों को कार्यप्रवण करने के लिए सरकारी अधिकारी लोगों से निरंतर संपर्क में रहनेवाली महिला सरपंच के रुप में शासकीय अधिकारी उसे पहचानते है। जिला परिषद के प्रमुख कार्यकारी अधिकारी, तहसीलदार, समूहविकास अधिकारी आदि लोगों से निवेदन करने के लिए, कुछ माँगे सामने रखने के लिए वह कितनी बार मिल चुकी है। जब उसे पूछा गया की गाँव के कारोबार के लिए निरंतर बाहर जाना पड़ता है, तो घरवाले विरोध नहीं करते? बीजाबाईने बताया, ''बिलकुल नहीं। उल्टे गाँव जाने के लिए पैसे देते हैं। ऐसा है साहब, पहले अपनी कीमत घरमें होनी चाहिए, फिर गाँव भी देता है। नेतृत्व गुण, संगठन कुशलता के साथ स्त्रियों मे व्यवस्थापन

कुशलता भी होती है और वैचारिकता को भी अब ग्रामीण विभाग में मौका मिल रहा है। गाँव की औरतों ने विशेष रुप से बताया की महिला सरपंच बन गई इसलिए हम ग्रामपंचायत में बैठ सकते हैं। बीजाबाई को पूछा की, ''ग्रामपंचायत कार्यालयका तिरंगा फरहाने का सम्मान जब पहली बार मिला तब आप को क्या लगा?'' 'बीजाबाईने कहा, शरीर में कंपन हुआ लेकिन झंडा फरहाने लगते ही गर्व हुआ। मैं भी कुछ हूँ, बलवान, हिम्मतवान हूँ। ऐसे लगा।'

गाँव की किसी भी महिला पर अगर अन्याय होता है तो वह उनके घर जाती है, समझाती है, उनके झगडे मिटाने की कोशिश करती है, पीडित महिलाओं की मदद करती है। उसे इस प्रकार के अनेक काम है। उसकी आक्रामक तड़प से उसे कोई विरोध नहीं करता उसकी बात का महत्व है।

गाँव के लोगों को बीजाबाई के काम पसंद आए। इसलिए उसने अगस्त २००५ का चुनाव लड़ा। इस चुनाव में उसकी बहुमत से विजय हुई और आरक्षण के कारण सरपंच भी हुई। आज पूरे गाँव पर उसका राज है। और गाँव के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक विकास के लिए उसकी हर कोशिश होती है। पिछड़ी जाति के परिवार की अनपढ़ तथा बकरियाँ पालते हुए, मजदूरी करके आप भले अपना काम भला कहनेवाली बीजाबाई आज पॅक्स कार्यक्रमद्वारा मिलनेवाली विविध प्रकार की प्रशिक्षण से बातूनी और निर्भीक हो गई हैं। गाँव के कार्यक्रमों में सहभाग लेते हुए, कभी पहल करके उसने ग्रामस्वच्छता अभियान चलाया। गाँव को पारितोषिक मिल गया। गाँव में जलस्वराज्य प्रकल्प चलाया। लोगों के कार्य करती रही। घरवालों का और गाँववालों का समर्थन प्राप्त करके बहुमत से चुनी गई और सरपंच बन गई। पुरानी बकरियाँ चरानेवाली बीजी आज..... 'माननीय सरपंच, बीजाबाई अल्हाट' हो गई है।

* * *

चुल्हेंसे पंचायत तक

बारिश के पानी पर पूर्णत: निर्भर होनेवाली खेती और उसके साथ आनेवाला हर सालका अकाल यह मराठवाडा की विशेषता है। इस विभाग में किसानों के लिए और खेत मजदूरों के लिए खेती ही उत्पन्नका प्रमुख साधन है। कुछ बंजर पहाडी, पडीत जमीन मराठवाडा के देत में अधिक मात्रा में मिलती है। विविध प्रकारकी परती जमीन में देवस्थान की जमीन, इनामी जमीन, पहाडी जमीन, गायरान जमीन, आदि नामों से हर देहात में परती जमीन है। यह जमीन कुछ विभागों में पहाडी, कंकडी, तो कहीं मध्यम और अच्छी भी है। इस पर प्रदेश सरकार के राजस्व खाते का कानूनन अधिकार है। लेकिन गाँव के स्तर पर गाँवकी सामाजिक मालकी के रुप में पशुओं को चरने के लिए रखी गयी है। प्रत्येक गाँव में इस प्रकारकी जमीन की मात्र औसत ५० ते १००० एकड़ इतनी है। इस सरकारी गायरान जमीन पर दलित, भटके, भूमिहीन खेत मजदूरों ने अतिक्रमण करके खेती के लिए उपयोग में लाने का आंदोलन इस विभाग में शुरु हो रहा है। सामाजिक संस्था एवं संगठन इस प्रकार का जनजागृति आंदोलन करके ये जमीन भूमिहीनों के नाम पर चढाने के लिए कोशिश कर रहे हैं। लेकिन इसके लिए स्थानिक गाँववालो का प्रखर विरोध है। अतिक्रमित गायरान में मनी चनाई खेती में पुशओं को हाँकना, झूठ-मूटके कोतवाली गुनाह दर्ज करना, गायरान धारकों के विरोध में नौकरशाही को सक्रिय करना आदि विषयों पर गाँव के स्तर पर हमेशा झगड़े होते रहते है। ऐसे आंदोलन में मोर्चा, कुपोषण शिबिरों मे बीड जिले के पिसेगाँव का मच्छिन्द्र लांडगे परिवार हमेशा सहभागी होता था। आंदोलन के इस कालखंड में लांडगे परिवार केज की जनविकास सामाजिक संस्था के संपर्क में था। जमीन के हक के संदर्भ में भूमिहीन दलित समाज में समझ, जागृति और संगठन के लिए यह संस्था काम कर रही थी। बचत संगठन पंचायत राज प्रशिक्षण इस कार्य में पिसेगाँव की उषा मच्छिन्द्र लांडगे यह दसवीं तक पढ़ी-लिखी दलित महिला संस्था के संपर्क मे आ गई। आज सात सदस्यों

उषा लांडगे

वाले पिसेगाँव की सरपंच है।

केज तहसील से पिसेगाँव केवल ५ कि. मी. फासले पर है। ७०० परिवारों की बस्तीवाले इस गाँव की आबादी ३००० है। जिसमें मराठा, बंजारा और मातंग समाज के समान मात्रा में घर है। बीड जिला ऊस (गन्ना) तोडनेवाले कामगारों के लिए मशहूर हैं। इस गाँव प्रमुख व्यवसाय ऊस (गन्ना) तोडना और खेत मजदूरी है। गाँव मे जिला परिषद की सातवी कक्षा तक पाठशाला है और निजी संस्थाद्वारा दसवीं तक पाठशाला है। गाँव मे माहुर देवी का मंदिर है। जिसका फरवरी में मेला होता है। जिसमें कुस्ती, तमाशा, पालकी के लिए आजू-बाजू के गाँव से लो इकठ्ठे हो जाते हैं।

टिन के नाटे-बौने घर पर 'संत भगवान बाबा वाचनालय, पिसेगाँव' बोर्ड लटक रहा था। पति मच्छिन्द्र लांडगे और अपनी दो बेटियाँ पूजा और ऋतुजा

के साथ उषा इसी घर में रहती है। घर के सामने ही गाँव की प्रमुख सड़क और सामने ही ग्रामपंचायत कार्यालय। इसलिए ग्रामसभा अथवा मीटिंग का बोर्ड घरके सामने लटकाते ही पूरे गाँव में संदेश पहुँच जाता है। कम्युनिकेशन का इतना सीधा और सहज रास्ता अपनानेवाली उषा दसवी तक पढ़ी–लिखी, साँवली सी लेकिन प्रभावी व्यक्तित्व की स्मार्ट औरत है। रोनेवाली दोनों बच्चियों को सँभालते–सँभालते हमारे साथ गपशप कर रही थी। बचत गट के कारण गाँव की औरतों में मेरा संपर्क बढ़ने लगा। मैं नयी–नयी शादी करके यहाँ आई थी। मेरा किसी से इतना परिचय नहीं था। आडे वक्त 'बचत संगठन' का उपयोग होता है। इतनी उद्देश्य से गाँव की महिलाओं को एकत्रित किया। यह गाँव स्थलांतरित मजदूरों का है, इसलिए समूह बनाने मे अडचनें आई। लेकिन बचत संगठन की मीटिंग में आर्थिक अडचनों के साथ महिलाओं के वैयक्तिक, पारिवारिक, स्वास्थ्य विषयक समस्याओं पर हम चर्चा करते हैं। उन्हें कानून की, विविध शासकीय आयोजनों की जानकारी हम देते हैं। इसलिए महिलाओं को उनके अधिकार, हक के बारे में समझ निर्माण हुई है। पढ़ी–लिखी होने के कारण उषाने एकसाथ सब कुछ बता दिया। गायरान के संदर्भ मे मोर्चा, रास्ता रोको के लिए अपने पति के साथ उषा तहसील कचहरी में जाती थी। घोषणा देते हुए आंदोलन में सहभागी भी होती थी। लेकिन संयुक्त परिवार में शुरुआत में कुछ विरोध भी हुआ, पर पति का समर्थन था इसलिए ज्यादा समस्याएँ नहीं आई। घर का कपडे, बर्तन धोना, खाना बनाना आदि कार्य पूरे करके बाद में वह मोर्चा में शामिल होती इसलिए घर से ज्यादा शिकायत नहीं हुई। इस बात को उषा बार बार बता रही थी।

गाँव की एक लड़की अलका सूर्यवंशी। उसका पति दस सालों से दूर था। पत्नी को गाँव में रखकर केज में दूसरा घर बनाकर रहता था। इधर अलका अपनी एक लड़की और तीन लड़के (चार बच्चे) के साथ बेहाल थी। यह समस्या लेकर अलका बचत संगठन के पास आई। उस पर गाँव की सभी महिलाओं मे चर्चा हुई। और महिलाओं ने अलका के पतिको मीटिंग में बुलाया। उससे खेत लेकर अलका को खेती करने का हक दिलाया। आज खेतीके उत्पादन से 'अलका' अपने चार बच्चों को पाल–पोस रही है। बचत संगठन की

महिलाओं के संगठित प्रयत्नों से और उषा की पहल से यह पारिवारिक समस्या हल हुई।

गाँव के महिलाओं की साहूकार के पंजे से खेती छुडाना, शादी–ब्याह में मदद करना, दवाखाने के लिए मदद करना तथा बालविवाह रोकना, लड़कियों की शिक्षा के लिए गाँव से बस की व्यवस्था करना आदि गाँव के उपयोगी कार्य 'बचत संगठन' द्वारा होते है।

उषा महिलाओं की स्वतंत्र ग्रामसभा बुलाती है। जिसमें प्रानी का प्रश्न, अंतर्गत सड़के, गटार–नाले, कहाँ और किस तरह करने चाहिये जैसे प्रमुख विषयों पर चर्चा करवाती है। इसी कारण महिलाओं का भय कम हो जाता है। वे ग्रामसभा में प्रश्न पूछती है, प्रस्ताव रखती है और मंजूर करवाती है।

गाँव की पीने के पानी की समस्या दूर करते समय गाँव के प्रतिष्ठितों का विरोध सहना पड़ा। गाँव के लोग दलित बस्ती की बोअर की मोटर निकालके ले गए। उषाने पुलिस स्टेशन में जाकर स्वयं अर्जी दी थी। उसे वापस लेने के लिए उसपर प्रचंड दबाव हो रहा था। लेकिन उसने मोटर वापस लेकर ही दम लिया।

गाँव के ग्रामसेवक ठीक से काम नहीं कर रहे थे। अनेक महीनों बाद भी वह गाँव मे नहीं आते थे। इसलिए उषाने गाँव की महिलाओं के साथ लेकर तहसीलदार केज के पास निवेदन दिया और आंदोलन की धमकी से ग्रामसेवकों का तुरंत तबादला हुआ।

इस तरह गाँव के विकास के लिए, संघर्ष के लिए, महिला संगठन बढ़ाने के लिए उषा उसे मिले हुए प्रशिक्षण का, स्वयं की शिक्षा उपयोग करके स्वयं के अधिकार और कर्तव्य के प्रति सजग रहकर कार्यरत है। एक गायरान आंदोलन से सरपंच तक की यात्रा करके उषा एक बडे गाँव की बहुमत में चुनी हुई सरपंच के रूप में लोगों में परिचित है।

* * *

सक्षमीकरण

मुस्लिम समाज की एक महिला सरपंच वह भी फकीर जाति की । यह कितना बडा सम्मान है। यह सम्मान मिला है जायदाबी बाई को। समाज और धर्म का प्रचंड विरोध होने के बावजूद मिहला गाँव का कामकाज संभाल सकती है, यह सिद्ध हुआ है। उसे कोई समाज, कोई धर्म रोक नहीं सकता। इसका उदाहरण मतलब सौ. जायदाबी बाई है।

औरगांबाद से ३० कि. मी. अंतर पर ता. पैठण, जिला औरंगाबाद स्थित जांभली गाँव। अत्यंत मनोरम लैंड स्केप की तरह नैसर्गिक सौंदर्य से लबरेज पर्वतों की गोद में बसा गाँव। गाँव आते समय कुछ पक्का तो कुछ कच्चा रास्ता है। कच्चे रास्ते के किनारोंपर बडे लोगों के पोल्ट्री फार्म हाऊसेसे होने के कारण उनकी सुविधा के लिए पक्के रास्ते बने है। गॉव में प्रवेश करते समय पहले हनुमान मंदिर फिर उसके बाद बडी मस्जिद और पास ही ग्राम पंचायत समिति का कार्यालय है। कार्यालय के प्रवेश पर सरकारी सूचनाएँ लिखी है, जिनमें जन्म और मृत्यु की सूचना दर्ज कराने तथा १८ वर्ष से कम उम्र में शादी करना अपराध है लिखा है। सोलर लाईट उपकरण वाला यह जांभली गाँव है।

सरपंच बाई के घर जाते समय पुलिया पार कर जाना पडता है। यह जगह नई आबादी के नाम से पहचानी जाती है। रास्ता न होने पर भी चलते–चलते सरपंच बाई के घर पुहँचे। आजू–बाजू में कच्चे घर व झोपडे है। पूरी तरह से नैसर्गिक वातावरण अर्थात पूरी तरह... झाडों से घिरा जायदाबाई का घर। ६ १० का घर, बाजू में झोपडी, उस पर प्लास्टिका किचन ताकी अंदर पानी न आए। उम्र ४५ साल, नाटी पर गोरी। मांग से न तो सिंदूर नहीं माथे पर बिंदी। बुरका भी नही पहना। सीधी–दासी, पति के अलावा तीन बच्चे, दो बेटी और १२ वीं मे पढने वाला एक बेटा। पति अनपढ है पर व्यवहारी है। खुद का ईंट बेचने का व्यवसाय है, जीवन यापन चल जाता है।

घर के पास स्कूल है। बडा समाज मंदिर है। उसे ओटा बांधा है। उसका पूरा नाम सौ. जायदाबी स. शरफोद्दीन शाह। बंजारा समाज की सुरक्षित सीट होने के कारण कुछ जानकारों ने उसे सरपंच बनाने गे लिए ग्रामपंचायत चुनाव में शिवसेना पार्टी से खडा किया। पर उसकी ही छोटे भाई की पत्नी उसके विरोध में खडी हुई थी। मुझे लगा मैं बीच मे क्यों पिस रही हूँ। कई घरों के पुरुषों की अन्य समाज के लोगों से बैठक हुई और मैं चुनकर आ गई । बैं चुनकर आई

जायदाबीबाई

उसके बाद मुझे कुछ समझ में नही आता था। चुनाव के बाद पहली बार ग्रामपंचायत में पैर रखा। दो–ढाई महीने तो मैं कुछ बोली ही नहीं। मेरा परिवार, मतलब मेरे पति और बेटा काम संभालते थे। पति और बेटा ही समझाते कि यह ऐसा होता है, वह वैसा होता है। एक बार ग्रास्प नामक संस्था के लोग हमारे गाँव आए। बचत संस्था के बारे में जानकारी दी, मुझे अच्छा लगा। मैं और मेरे समाज की सात महिलाएँ तथा अनुसूचित जाति की पाँच महिलाएँ ५० रुपए हर महिने बचत संस्था में डालते है। वे सभी खेत या रोजगार गारंटी योजना में काम करने वाले मजदूर है। हमारे बचत संस्था का नाम सैयद सादत बाबा महिला स्वयं सहायता संस्था रखना सभी ने मंजूर किया है।

बचत संस्था के कार्यकर्ताओं में शुरुआत में पूरी जानकारी दी। बचत के फायदे गिनाए। मुझे पंचायती राज का प्रशिक्षण दिया फिर मुझे समझने आने लगा। मैं आज खुद ग्रामपंचायत जाती हूँ। मेरे ग्राम पंचायत को जोडकर चिंचोली, जावडी तांडा यह ग्राम पंचायत संस्था है। लोगों ने शिकायत की कि हमारे गाँव

इसमें नहीं आते हैं। तुम्हे हमारी जरूरत थोडी समझ आएगी। उसके बाद से मैं सभी गाँवो की बस्तियों में कोई हो या ना हो अकेले जाती हूँ। उनसे कहकर उनकी परेशानियों को दूर करती हूँ। लोग कहते हैं कि यह औरत बुरका तक नहीं ओढती है। पहले जिन्होंने मुझसे कहा अब वे चुप हैं। मेरा परिवार अब मेरे पीछे है। मुझे स्वतंत्र रुप से महिला ग्राम सभा में अच्छा प्रतिसाद मिला है। गाँव में कांक्रीट की सडक हो सकती है या नहीं, पर मुझे स्कूल का कमरा बनवाना अधिक महत्त्वपूर्ण लगा। स्कूल में लडकियों के लिए अलग से स्वच्छता गृह बनाए गए है। मैंने शिक्षकों से पूछा तो शिक्षकों ने बताया कि स्कूल के लिए और जगह में निर्माण कार्य कराने देने की मंजूरी है। मुझे यह सुनकर अच्छा लगा। पूरे गाँव की मानसिकता बदलने के लिए सरपंचबाई को सवा दो साल मेहनत करनी पडी। यह ध्यान में आया कि यहाँ पहाडी का पानी सीधे लोगों के खेतों में आता है जिससे फसल बरबाद हो जाती है। तब संस्था की मदद से उन्होंने तीन भूमिगत बांध तैयार रि लिये। लोग श्रमदान करें, इसलिए उसने अपना परिवार इस काम में लगा दिया। आज यहाँ खूब पानी है यह देखकर उनके चेहरों की कली खिल रही थी। यह देखकर अब २० लोगों ने श्रमदान कर अपनी खेती भी तैयार कर ली है।

लोगों की खेती अच्छी लहलहा रही थी, लोग कहते है सरपंचबाई ने हमारे लिए किय, इसके लिए आज हम आनंदित है। हमारी फसल आज दिख रही है नही तो आज तक किसी ने हमोरे लिए कुछ नहीं किया। कितने सरपंच आए और गए। महिला और मुस्लिम बाई केवल अकेली है। काम खत्म होने तक यहाँ रुकती है। ऐसी कोई दूसरी महिला न होजी जो ऐसे प्रेम से और गर्व से बोलती है।

जायदाबी बता रही थी, शिक्षण समिति व स्वास्थ्य समिति मेरे पास है। इसलिए खुद मैं सब देखती हूँ। मास्टर स्कूल में रोज आते हैं। अच्छा पढाते है। बच्चों से खिचडी बनाकर खिलाते है। बच्चे भी ज्यादा रोज आ रहे है।

इसके अलावा समाज मंदिरा का ओटा भी बनवा दिया, अच्छा बना है। ग्रामसेवक उसकी कोई भी बात नहीं टालता या कामचोरी नहीं करता। मेरा परिवार मेरे पीछे खडा है। वे कहते है तू समाज के लिए ज्यादा से ज्यादा वक्त दे। घर में रोक कर नहीं रखते। अभिमान से वह यह सब करती है।

मुझे अब गाँव के रास्ते, पानी और बिजली की व्यवस्था करनी है। लोग और अल्लाह मेरे साथ है तो मैं सब करके बताऊंगी साहब, ऐसा वह कहती है। और मेरे परिवार के लिए बचत गट से कुछ व्यवसाय शुरू करना है ताकि मेरा लडका अपने पैरों पर खडा हो सके। लडकियों को पढा लिखाकर समाज के काबिल बनाना है।

***